(ख) हल्दीघाटी का युद्ध .... में हुआ।

(ग) राणा अमर सिंह ने .... के काल में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली।

आपने क्या सीखा

- मध्य एशिया की अस्थिरता तथा भारत की राजनैतिक दशा का लाभ उठाकर बाबर भारत आया। पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में इब्राहिम लोदी को हराकर बाबर ने दिल्ली सल्तनत को समाप्त कर दिया। खानवा और चन्देरी युद्ध की विजय के बाद उसने भारत में मुगल वंश की नींव रखी।
- मुगल वंश की स्थापना से भारत में राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन हुए। मुगलों ने विशाल साम्राज्य स्थापित कर राजनैतिक एकीकरण किया। आर्थिक क्षेत्र में कृषि, व्यापार, पशुपालन, उद्योग-धंधों को बढ़ावा मिला। मुद्रा-प्रणाली का प्रचलन हुआ। सामाजिक क्षेत्र में हिन्दू-मुस्लिम एकता एवं समन्वय की शुरुआत हुई। हिन्दू-मुस्लिम की एक नई मिली-जुली संस्कृति का विकास हुआ। मुगल शासकों ने सतीप्रथा, शिशु कन्या-वध एवं बाल विवाह के विरुद्ध कदम उठाए। स्थापत्य कला, चित्रकला, संगीत एवं साहित्य के क्षेत्र में भी उस काल में प्रगति हुई।
- मुगलकाल के दौरान मराठा राज्य का उदय शिवाजी के नेतृत्व में हुआ, जो पेशवाओं के काल में चरम पर पहुँचा। परन्तु पानीपत के तृतीय युद्ध में 1761 ई. में अहमदशाह अब्दाली ने मराठों को हरा दिया। इस तरह मराठा शक्ति नष्ट हो गई।
- राजपूतों की उत्पत्ति के अनेक सिद्धांत हैं - अग्निकुल का सिद्धांत, विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत, भारतीय क्षत्रियों का सिद्धांत।
- सल्तनत काल से पूर्व राजपूतों का शासन भारत में रहा, परन्तु सल्तनत काल में इनकी शक्ति कमजोर हो गई। मुस्लिम शासकों से राजपूत परास्त हो गए। अकबर के समय राजपूतों के साथ मुगलों के अच्छे संबंध स्थापित हुए।

आइए, करके देखें

बाबर और शिवाजी के बारे में विभिन्न स्रोतों से सूचना एकत्र कर उनकी जीवनी तैयार करें।

पाठांत प्रश्न

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए –

राजपूतों, अकबर, 1680 ई., 1857 ई., हुमायूँ

(क) शेरखान ने .... को चौसा युद्ध में हरा दिया।

(ख) मुगल वंश का शासन भारत में .... तक रहा।

(ग) .... ने जजिया कर समाप्त करने के लिए कदम उठाए।

(ध) शिवाजी की मृत्यु .... में हुई।

(च) मुगल काल में .... की मुख्य शक्ति राजस्थान में केन्द्रित थी।

2. सही वाक्य पर ✓ और गलत पर ✗ का निशान लगाइए

(क) बाबर ने 1517 ई० में भारत की ओर बढ़ने का निश्चय किया। ☐

(ख) 1528 ई० में बाबर ने चन्देरी के युद्ध में मेदिनी राय को पराजित किया। ☐

(ग) काबुल और कंधार के मुगल गुटों की अकबर से दोस्ती थी। ☐

(ध) मुगल प्रशासन मनसबदारी प्रथा पर आधारित था। ☐

(च) 15 वीं शताब्दी में शिवाजी के नेतृत्त्व में मराठा राज्य का उदय हुआ। ☐

(छ) पेशवा मराठों ने मराठा सरदारों से सरदेशमुखी नामक कर लिया। ☐

3. सही मिलान कीजिए

(क)	चौसा युद्ध	1665 ई०
(ख)	हल्दी घाटी का युद्ध	1761 ई०
(ग)	पानीपत का तीसरा युद्ध	1539 ई०
(घ)	बाबर की मृत्यु	1576 ई०
(च)	पुरन्दर की संधि	1530 ई०

4. निम्नलिखिन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(अ) बाबर किन कारणों से भारत की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित हुआ?

....

(ब) भारत में मुगलवंश की नींव किसने रखी?

....

(स) खानवा का युद्ध कब और किसके बीच लड़ा गया?

....

(द) मुगल प्रशासन किस व्यवस्था पर आधारित था?

....

(य) अकबर की भू-राजस्व प्रणाली किसने तैयार की? इसकी दो विशेषताएँ लिखिए।

....

(र) मुगल-राजपूत संबंधों का मुगल साम्राज्य पर क्या प्रभाव पड़ा?

....

5. मुगल काल की संस्कृति के बारे में पाँच वाक्य लिखिए:

....

....

....

....

....

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

6.1

1. (क) 1494 ई. (ख) अकबर और हेमू के बीच
   (ग) खानवा (घ) हुमायूँ
2. (क) फरगाना, 1494 ई० में।
   (ख) रूमी तथा तुगलमा।
   (ग) 1526 ई. में। बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच।
   (घ) बाबर का पुत्र। पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर।

6.2

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
   (घ) ✗ (च) ✓

2.	(घ) उपरोक्त सभी	3.	(क) 1/3 भाग
4.	(ग) तुर्की	5.	(ग) मनसबदारी

6.3

1. (क) शिवाजी, मराठा राज्य (ख) रायगढ़
   (ग) 1680 ई. (घ) चौथ
   (च) बालाजी विश्वनाथ
2. (ग), 3. (ख), 4. (क)

6.4

1. (क) ✓ (ख) ✗
   (ग) ✗ (घ) ✓
2. (क) मुहम्मद गोरी (ख) 1576 ई. (ग) जहाँगीर

पाठांत प्रश्न

1. (क) हुमायूँ (ख) 1857 ई. (ग) अकबर
   (घ) 1680 ई. (च) राजपूतों
2. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
   (घ) ✓ (च) ✗ (छ) ✓
3. (क) 1539 ई. (ख) 1576 ई. (ग) 1761 ई.
   (घ) 1530 ई. (च) 1665 ई.
4. (अ) अभिजात्य वर्ग के विरोध, कुलीनों के साथ छोड़ने, मध्य एशिया में अस्थिरता के कारण।
   (ब) बाबर ने।
   (स) 1527 ई. में, बाबर और राणा साँगा के बीच।
   (द) मनसबदारी व्यवस्था पर।
   (य) राजा टोडरमल ने। भू-राजस्व उपज का 1/3 भाग था। भू-राजस्व उपज भूमि की उर्वरता, आदि के आधार पर वसूला जाता था।
   (र) वीर राजपूतों का सैन्य और प्रशासनिक सहयोग मिला। मुगल साम्राज्य शक्तिशाली हुआ।
5. मुगल कालीन संस्कृति
   (क) हिन्दू-मुस्लिम समन्वित संस्कृति (ख) संगीत को बढ़ावा
   (ग) मुगलशैली की स्थापत्य कला का विकास (घ) साहित्य को बढ़ावा
   (च) चित्रकला का विकास

7

ब्रिटिश कंपनी का शासन

भारत में सबसे पहले पुर्तगाली लोग 16 वीं शताब्दी में आए। इसके बाद डच, ब्रिटिश, फ्रांसीसी तथा डेनिश कंपनियाँ भारत में व्यापार करने आईं। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने मुगलों से व्यापार करने का फरमान प्राप्त किया। बाद में पलासी और बक्सर की लड़ाई में कंपनी ने भारतीय राजाओं को हरा दिया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल में 1765 ई. में शासन शुरू किया। धीरे-धीरे कंपनी ने अपना शासन भारत के अन्य हिस्सों में फैलाया। वे कृषि के क्षेत्र में इजारेदारी, स्थायी बन्दोबस्त द्वारा लगान वसूलने लगे। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय व्यापार और उद्योग धंधे प्रभावित किए। कंपनी की इस नीति से गरीबी और बेरोजगारी बढ़ी। कंपनी ने सती प्रथा को समाप्त किया और विधवा पुनर्विवाह के लिए कानून बनाए। कंपनी ने अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार किया। 19 वीं सदी में राजा राम मोहन राय ने धर्म एवं समाज सुधार का काम शुरू किया। इन कार्यों ने भारतीयों में जन जागरण किया। जन जागरण से भारतीयों में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति के खिलाफ आक्रोश पैदा हुआ। ब्रिटिश कंपनी के खिलाफ भारतीय लोगों का आक्रोश 1857 ई. के संग्राम के रूप में सामने आया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- अंग्रेज और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के भारत में आगमन का वर्णन कर सकेंगे;
- ब्रिटिश कंपनी द्वारा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की व्याख्या कर सकेंगे;
- ब्रिटिश साम्राज्य में कृषि, व्यापार, उद्योग धंधों तथा समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट कर सकेंगे;

- भारत में 19वीं सदी के जन जागरण से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे;
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति के विरुद्ध भारतीयों में फैले असंतोष को स्पष्ट कर सकेंगे और
- 1857 ई. के संघर्ष का वर्णन कर सकेंगे।

7.1 अंग्रेजों और ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत आगमन

सन् 1498 ई. में पुर्तगाल का निवासी वास्को डि गामा भारत आया। वह कालीकट बन्दरगाह पर आया था। यहाँ के शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया। वास्को डि गामा यहाँ से मसाले, सूती वस्त्र एवं अन्य सामान जहाज में लादकर अपने देश ले गया। इसके बाद अन्य यूरोपीय लोग, जैसे– डच, फ्रांसीसी, डेनिश तथा अंग्रेज भारत आए। इन सबका मुख्य उद्देश्य व्यापार करना था।

चित्र 7.1 : वास्को डि गामा

लंदन के व्यापारियों ने संयुक्त शेयर कंपनी के रूप में 31 दिसम्बर, 1600 ई. को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। इस कंपनी को 'जॉन कंपनी' भी कहा जाता था। भारत में मुख्य मुकाबला फ्रांसीसी व्यापारियों और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच था। सर्वप्रथम कैप्टन हॉकिंस मुगल दरबार में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए व्यापार की अनुमति प्राप्त करने आया था पर वह असफल रहा।

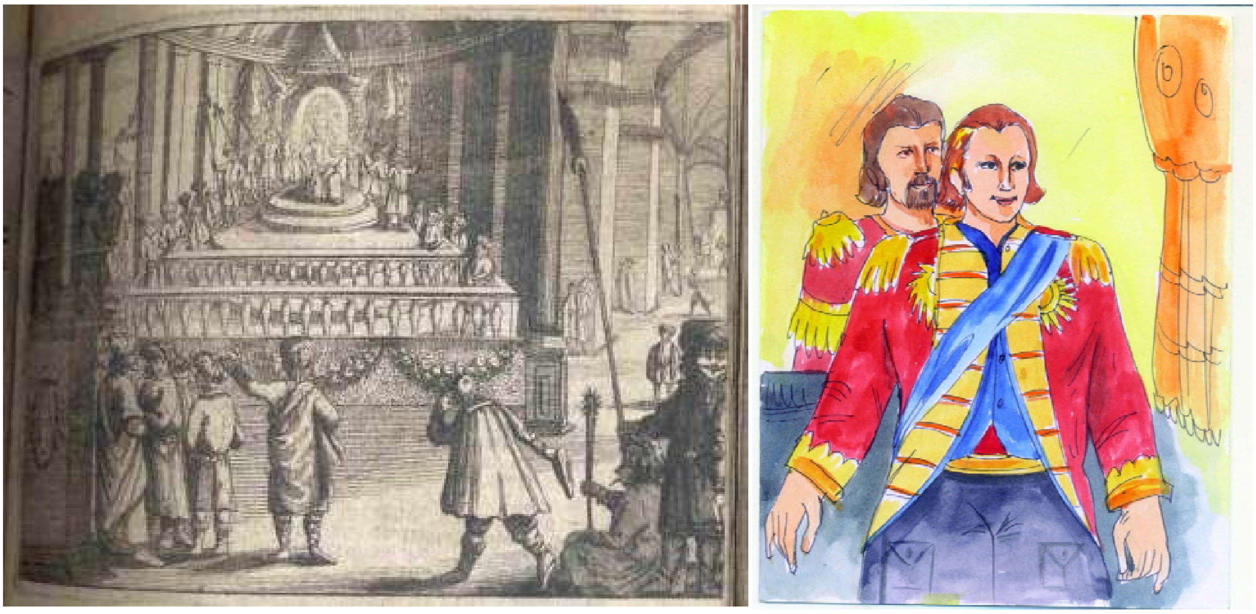

चित्र 7.2 : जहाँगीर के दरबार में सर टॉमस रो

ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ प्रथम के राजदूत सर टॉमस रो जहाँगीर के काल में मुगल दरबार में आए। मुगल बादशाह जहाँगीर ने 1612 ई. में सर टॉमस रो को सूरत में व्यापारिक केन्द्र की स्थापना का अधिकार दे दिया। इस मुगल शाही फरमान के द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में व्यापार करने का मौका मिला।

भारतीय वस्तुओं के सस्ते होने और अच्छी गुणवत्ता के कारण यूरोप में काफी माँग थी। यूरोपीय कंपनी भारतीय वस्तुएँ खरीदती थी, फिर उन्हें यूरोपीय देशों में बेचकर मुनाफा कमाती थी। शुरू में पुर्तगालियों की ही तरह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने को व्यापारिक गतिविधियों तक सीमित रखा।

1650 ई. के बाद राजभक्त अंग्रेज व्यापारियों की जगह नए व्यापारी वर्ग ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी पर अधिकार किया। नए व्यापारी वर्ग ने अमेरिका और वेस्ट इंडीज के उपनिवेशी व्यापारियों का अनुसरण किया। उन्होंने इंग्लैंड, अफ्रीका और भारत को आपस में जोड़कर औपनिवेशिक बस्तियों का जाल बिछा दिया।

1707 ई. में मुगल बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल सत्ता कमजोर हो गई। इस कारण बंगाल, हैदराबाद, अवध, पंजाब तथा मराठा जैसी क्षेत्रीय शक्तियों ने राजनैतिक अस्थिरता पैदा की। इन्हीं परिस्थितियों में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में पैर पसारने का अवसर मिला। अब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में औपनिवेशिक संस्थाओं के द्वारा सत्ता स्थापित करने का सपना देखने लगी। भारत में शासन स्थापित करने के लिए नियमों की आवश्यकता थी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार हेतु तीन तरीके अपनाए–

1. युद्ध एवं विजय के द्वारा भारतीय क्षेत्र पर कब्जा करना,
2. सहायक संधि द्वारा भारतीय क्षेत्र पर नियंत्रण करना, और
3. विलय की नीति द्वारा भारतीय क्षेत्रों का अधिग्रहण करना।

साम्राज्य के विस्तार के लिए स्थानीय शासकों से संधियाँ एवं समझौते किए गए। लॉर्ड वेलेजली ने 'सहायक संधि' द्वारा कंपनी के क्षेत्र का विस्तार किया। लॉर्ड डलहौजी ने 'डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' द्वारा विलय की नीति से कंपनी का क्षेत्र फैलाया।

18वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में फ्रांसीसी और अंग्रेजी कंपनियों की व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण तीन युद्ध हुए। इन्हें कर्नाटक युद्ध कहा जाता है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी फ्रांसीसी कंपनी के प्रभुत्व को समाप्त करना चाहती थी इसलिए यूरोप में शुरू हुए सात वर्षीय युद्ध (1756-63 ई.) के कारण दोनों कंपनियों ने भारत में लड़ाई शुरू की और तीसरा कर्नाटक युद्ध हुआ। इसी दौरान वांडियावाश युद्ध (1760 ई.) में ब्रिटिश कंपनी के सर आयर कूट ने डुप्ले और बुसी को पराजित कर फ्रांसीसी शक्ति को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया। पांडिचेरी पर 1761 ई. में अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा फ्रांसीसी कंपनी को संपत्ति लौटा दी गई, केवल व्यापार तक ही उसे सीमित कर दिया गया। इससे पहले 1757 ई. में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला का ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से मतभेद होने के कारण पलासी युद्ध हुआ। इस युद्ध में सिराजुद्दौला की पराजय हो गई।

चित्र 7.3 : पलासी का युद्ध

पलासी युद्ध के मुख्य कारण थे – मुगल बादशाह द्वारा दिए गए शाही फरमान का दुरुपयोग, मात्र 3000/- रु. के बदले बंगाल में करमुक्त व्यापार की सुविधा, नवाब की अनुमति के बिना दुर्ग का निर्माण, नवाब के अधिकारों को चुनौती, नवाब के विरुद्ध अंग्रेजों द्वारा अमीरचन्द, जगत सेठ और सेनापति मीरजाफर से मिलकर किया गया षड्यंत्र आदि।

मीर जाफर ने नवाब बनने पर कंपनी और उसके अधिकारियों को उपहार-स्वरूप काफी धन दिया पर कंपनी और अधिकारियों की माँग बढ़ने लगी। इस बढ़ती माँग को पूरा करने में मीर जाफर असमर्थ होने लगा। इस कारण मीर जाफर अंग्रेजों की जगह डच कंपनी से नजदीकी संबंध बनाने लगा, तब अंग्रेजों ने मीर जाफर को हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया।

चित्र 7.4 : नवाब सिराजुद्दौला

मीर कासिम बंगाल का कठपुतली शासक नहीं बनना चाहता था इसलिए उसने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को सैन्य खर्चों के लिए वर्द्धमान, मिदनापुर, चितागोंग (चटगाँव) का अधिकार दिया परन्तु कंपनी द्वारा कर मुक्त व्यापार के मुद्दे पर टकराव शुरू हुए। मीर कासिम ने दो वर्षों के लिए भारतीय और अंग्रेज व्यापारियों को कर मुक्त व्यापार करने की छूट दी। इससे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को झटका लगा।

मीर कासिम ने अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति पर संगठित करना शुरू किया। अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से हटाकर मुंगेर ले गया। उसने गोला-बारूद एवं बन्दूक की फैक्ट्री लगवाई। इसे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने मीर कासिम का अपराध माना। मीर कासिम ने भी ब्रिटिश कंपनी के विरुद्ध मुगल बादशाह शाह आलम और अवध के नवाब शुजाउद्दौला को अपने साथ मिला लिया। इस गठबन्धन की सेना और ब्रिटिश सेनापति क्लाइव की सेना के बीच 22 अक्टूबर, 1764 ई. को पटना के निकट बक्सर में युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेजों ने मीर कासिम की सेना को हरा दिया।

बाद में मुगल बादशाह शाह आलम ने अंग्रेजों से इलाहाबाद में संधि कर ली और अवध के नवाब ने युद्ध से अपने को अलग कर लिया। मीर कासिम अकेला लड़ता रहा। बाद में उसकी मृत्यु हो गई। बक्सर युद्ध में जीत हासिल कर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल-बिहार और उड़ीसा पर दीवानी अधिकार प्राप्त हो गया। अब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापारिक से राजनैतिक शक्ति हो गई। क्लाइव ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना कर दी।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. सही मिलान कीजिए–

I.	बक्सर युद्ध	(क)	1707 ई.
II.	पलासी युद्ध	(ख)	1760 ई.
III.	वांडियावाश युद्ध	(ग)	1763 ई.
IV.	पेरिस संधि	(घ)	1764 ई.
V.	औरंगजेब की मृत्यु	(च)	1757 ई.

2. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, सहायक, लॉर्ड डलहौजी, सूरत, पुर्तगाल

(क) वास्को डि गामा .... का निवासी था।

(ख) 31 दिसम्बर, 1600 ई. को .... की स्थापना हुई।

(ग) 1612 ई. में सर टॉमस रो ने .... में व्यापारिक केन्द्र की स्थापना का अधिकार प्राप्त किया।

(घ) लॉर्ड वेलेजली ने .... संधि लागू की।

(च) 'डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' .... ने लागू किया था।

7.2 ब्रिटिश साम्राज्य– कृषि, व्यापार, उद्योग धंधों का विकास और समाज पर प्रभाव

1757 ई. में पलासी युद्ध और 1764 ई. में बक्सर युद्ध के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल में राजनैतिक सत्ता स्थापित की। क्लाइव ने बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली (द्वैध शासन) लागू की। इसके द्वारा क्लाइव ने बंगाल पर अप्रत्यक्ष शासन किया। इस शासन प्रणाली के अनुसार अंग्रेजों के पास शक्ति और

संसाधन थे पर उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं थी। जबकि बंगाल के नवाब के पास प्रशासन चलाने की जिम्मेदारी थी, पर न तो शक्ति थी, न संसाधन। इस द्वैध शासन प्रणाली से बंगाल में खुली लूट मची। इससे भ्रष्टाचार फैला तथा अराजकता को बढ़ावा मिला।

चित्र 7.5 : लार्ड क्लाइव

इन परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार कंपनी को स्वतंत्र छोड़ने के पक्ष में नहीं थी। इंग्लैंड में व्यापारियों और उत्पादकों द्वारा सरकार पर कंपनी का एकाधिकार समाप्त करने का दबाव बढ़ने लगा। बंगाल में भ्रष्टाचार व्याप्त था। इसके कारण ब्रिटिश संसद ने 1773 ई. में रेग्यूलेटिंग एक्ट बनाया। इसमें कंपनी के स्वतंत्र व्यापार को नियंत्रित करने, कंपनी के शासन को 20 वर्ष तक सीमित करने, बंगाल, बम्बई और मद्रास क्षेत्र को अंग्रेजी सरकार के अधीन करने तथा बम्बई और मद्रास को बंगाल के गवर्नर के अधीन करने का प्रावधान किया गया। अब बंगाल का गवर्नर, 'गवर्नर जनरल' कहा जाने लगा। वॉरेन हेस्टिंग्स प्रथम गवर्नर जनरल बना।

1784 ई. में 'पिट्स इंडिया एक्ट' बना, जिसमें बोर्ड ऑफ कंट्रोल की स्थापना की गई। इससे संसद के प्रभाव में वृद्धि की गई। लॉर्ड कार्नवालिस ने 1786 ई. से 1793 ई. तक शासन किया। कार्नवालिस ने कर्मचारियों द्वारा व्यापार किए जाने को गैर कानूनी घोषित किया। कर्मचारियों के वेतन में सुधार किया। कंपनी के व्यापारिक और प्रशासनिक कार्यों को अलग किया। राजस्व संग्रह करना कंपनी का मुख्य प्रशासनिक कार्य रह गया।

वॉरेन हेस्टिंग्स के समय की इजारेदारी प्रथा की खामियों को देखते हुए लॉर्ड कार्नवालिस ने बंगाल में 'इस्तमरारी' (स्थायी बन्दोबस्त) प्रथा लागू की। इसमें कंपनी ने एकमुश्त राशि का भुगतान करने पर जमींदारों को जमीन का मालिकाना हक स्थायी रूप से सौंप दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जमींदार भूमि के मालिक हो गए और किसान अपनी ही जमीन पर मजदूर हो गए। जमीन की अब खरीद-बिक्री हो सकती थी, जमीन को गिरवी रखा जा सकता था अथवा दूसरे के नाम हस्तांतरित किया जा सकता था। कंपनी ने कृषि के विस्तार एवं विकास से अपना हाथ खींच लिया।

बम्बई और मद्रास में अलेक्जेंडर रीडन ने भू-राजस्व वसूली की रैयतवाड़ी व्यवस्था अपनाई। इसमें किसान भू-राजस्व का भुगतान सीधे सरकार को करते थे। 1822 ई. में भू-राजस्व वसूलने की एक प्रणाली थी– महालवाड़ी, जिसका अर्थ है– बड़े गाँव (महाल) द्वारा सामूहिक रूप से कर वसूल कर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंपना। यह पंजाब तथा उत्तर भारत में लागू की गई थी।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की भू-राजस्व नीति ने कृषि के विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि भू-राजस्व की दर बढ़ा दी। जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण से किसानों ने कृषि-कार्य छोड़ दिया। इससे किसानों में भुखमरी और गरीबी बढ़ी। अकाल और सूखे तथा साहूकारों के ऋण ने किसानों की स्थिति और खराब कर दी। 1813 ई. के चार्टर द्वारा भारत के साथ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया। 1833 ई. के चार्टर के द्वारा चीन के साथ कंपनी के व्यापार करने के एकाधिकार को भी समाप्त कर दिया गया।

1757 ई. से 1813 ई. तक कंपनी ने भारतीय राजस्व का उपयोग भारतीय तैयार उत्पादों को खरीदकर इंग्लैंड निर्यात करने में किया। इन उत्पादों में कृषि उत्पाद– (अफीम, कपास, रेशम, जूट, अनाज, तेल, बीज तथा चाय) प्रमुख थे। कृषि के व्यवसायीकरण ने अकाल को जन्म दिया।

ब्रिटिश शासन की मुक्त व्यापार नीति ने भारतीय उपनिवेश की प्रकृति को बदल दिया। ब्रिटिश उद्योगों द्वारा माल का अधिक उत्पादन किए जाने के कारण सामान सस्ता हो गया। दूसरी ओर हाथ से बनने तथा उनका उत्पादन कम होने के कारण भारतीय वस्तुएँ महँगी हो गईं। इस कारण ब्रिटिश वस्तुओं के लिए भारतीय बाजार खोल दिया गया। इंग्लैंड में निर्मित वस्तुओं पर व्यापार कर भी नाममात्र के थे। इंग्लैंड की वस्तुओं ने बाजार में भारतीय उत्पादित वस्तुओं का स्थान ले लिया क्योंकि इंग्लैंड की वस्तुएँ सस्ती और टिकाऊ थीं। इस परिस्थिति में भारतीय व्यापार और उद्योग-धंधे बुरी तरह प्रभावित हुए। भारतीय सूती वस्त्र उद्योग चौपट हो गए और व्यापार भी नष्ट हो गया। बुनकर और व्यापारियों की दशा खराब हो गई। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों से आत्मनिर्भर भारतीय समाज अब गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी का शिकार हो गया।

पाठगत प्रश्न 7.2

1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए–

(क) क्लाइव ने बंगाल में दोहरी (द्वैध) शासन प्रणाली लागू की। ☐

(ख) वॉरेन हेस्टिंग्स बंगाल का द्वितीय गवर्नर जनरल था। ☐

(ग) मद्रास में रैयतवाड़ी व्यवस्था अलेक्जेंडर रीड ने लागू की। ☐

(घ) महालवाड़ी भू-राजस्व व्यवस्था 1822 ई. में लागू की गई। ☐

(च) 1833 ई. के चार्टर द्वारा चीन के साथ कंपनी के व्यापार का एकाधिकार समाप्त कर दिया गया। ☐

2. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-

कार्नवालिस, रैयतवाड़ी, महालवाड़ी, 1784 ई.

(क) पिट्स इंडिया एक्ट .... में बना।

(ख) .... ने कर्मचारियों द्वारा व्यापार किए जाने को गैरकानूनी घोषित किया।

(ग) .... भू-राजस्व व्यवस्था में किसान भू-राजस्व का भुगतान सीधे सरकार को करते थे।

(घ) .... का अर्थ है, बड़े गाँव द्वारा सामूहिक रूप से कर वसूल कर कंपनी को सौंपना।

7.3 19वीं सदी का जन जागरण काल– सामाजिक, शैक्षिक व धार्मिक सुधारों का प्रभाव

19वीं सदी को भारत में जन-जागरण का काल माना जाता है। इसकी शुरुआत बंगाल से हुई और धीरे-धीरे पूरे भारत में फैल गया।

बंगाल में राजा राम मोहन राय ने 1814 ई. में आत्मीय सभा की स्थापना की। आत्मीय सभा ने तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर बहस प्रारंभ की। उन्होंने पश्चिमी वैज्ञानिक शिक्षा का समर्थन किया। हिन्दू धर्म की प्रथाओं, जैसे– मूर्तिपूजा, छुआछूत, सती प्रथा आदि का विरोध किया। 1828 ई. में आत्मीय सभा को ब्रह्म समाज में बदल दिया गया। लॉर्ड विलियम बेंटिंक के सहयोग से सती प्रथा को 1829 ई. में गैर कानूनी घोषित किया गया। 1825 ई. में उन्होंने वेदान्त कॉलेज की स्थापना करवाई। 1833 ई. में राजा राम मोहन राय की मृत्यु के बाद देवेन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज का नेतृत्त्व किया।

केशव चन्द्र सेन 1858 ई. में ब्रह्म समाज में शामिल हुए। उन्होंने समाज की गतिविधियों को बंगाल के बाहर उत्तर प्रदेश, पंजाब, मद्रास तथा बम्बई तक फैलाया। केशवचन्द्र सेन ने जाति प्रथा का विरोध किया। उन्होंने महिला अधिकारों और विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया। उन्होंने ब्रह्म समाज के सुधारों को सार्वभौमिक बना दिया। 1866 ई. में ब्रह्म समाज का दो धड़ों में बँट गया– एक देवेन्द्रनाथ टैगोर के नेतृत्त्व में आदि ब्रह्म समाज; दूसरा, केशव चन्द्र के नेतृत्त्व में ब्रह्म समाज ऑफ इंडिया।

चित्र 7.6 : ईश्वर चंद्र विद्यासागर

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने कन्या शिक्षा की वकालत की। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक बुराइयों– बहुपत्नी प्रथा, बाल-विवाह आदि का विरोध किया। उन्होंने विधवाओं की स्थिति सुधारने के लिए लॉर्ड डलहौजी की सहायता से 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह कानून बनवाया।

रामकृष्ण परमहंस तथा उनके शिष्य नरेन्द्र ने सभी धर्मों की एकता, हिन्दू धर्म के प्रति विश्वास और आध्यात्मिक हिन्दूवाद का सिद्धांत दिया। नरेन्द्र बाद में स्वामी विवेकानन्द के नाम से विख्यात हुए। 1897 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द के द्वारा की गई। रामकृष्ण मिशन ने जातिप्रथा, छुआछूत, अंधविश्वास का विरोध करते हुए धार्मिक-सामाजिक जागृति पैदा की।

19वीं सदी में पश्चिमी भारत में के.टी. तैलंग, वी. एन. मांडलिक, आर. जी. भंडारकर, करसोन दास मूल जी, केशव चन्द्र सेन, महादेव गोविन्द रानाडे, आत्माराम पांडुरंग जैसे सुधारवादी नेताओं ने जातिप्रथा, छुआछूत, भेदभाव, मूर्तिपूजा, बहुदेववाद का विरोध किया। उन्होंने विधवा विवाह, नारी शिक्षा एवं एकेश्वरवाद का

समर्थन किया। 1844 ई. में मानव धर्म सभा एवं 1849 ई. में परमहंस मंडली की स्थापना हुई। आत्माराम पांडुरंग ने 1867 ई. में प्रार्थना समाज का गठन किया। महादेव गोविन्द रानाडे ने दक्कन शिक्षा समाज के संचालन में मुख्य भूमिका निभाई।

चित्र 7.7 : रामकृष्ण परमहंस

चित्र 7.8 : स्वामी विवेकानंद

दयानन्द सरस्वती ने 1875 ई. में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। दयानन्द सरस्वती ने *सत्यार्थ प्रकाश* की रचना की। शीघ्र ही आर्य समाज पंजाब और हिन्दी भाषी क्षेत्रों में फैल गया। लाहौर आर्यसमाज की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बन गया। आर्य समाज ने मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, पुराणों एवं ब्राह्मणों के वर्चस्व, बाल-विवाह, छुआछूत, भेदभाव तथा ईसाई-मुस्लिम धर्मांतरण का विरोध किया। आर्यसमाज ने कन्या शिक्षा, विधवाओं की स्थिति को सुधारने पर भी बल दिया।

चित्र 7.9 : दयानन्द सरस्वती

1883 ई. में दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के बाद आर्यसमाज बिखरने लगा। 1886 ई. में दयानन्द एंग्लो वैदिक ट्रस्ट तथा मैनेजमेंट सोसाइटी की स्थापना लाहौर में हुई। इस समिति ने शिक्षा के प्रसार के लिए स्कूल खोला और लाला हंसराज इसके प्राध्यापक बने। 1893 ई. में आर्यसमाज का विभाजन हो गया। लाला हंसराज और लाला लाजपत राय के नेतृत्व में दयानन्द एंग्लो वैदिक (डी.ए.वी.) समूह बना तथा मुंशीराम और लेखराम के नेतृत्व में गुरुकुल समूह बना।

गुरुकुल समूह ने वेदशिक्षा प्रचार के लिए जालंधर में आर्य कन्या पाठशाला स्थापित की। 1902 ई. में मुंशीराम ने हरिद्वार के काँगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की, जो आर्यसमाज की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया। मुंशीराम संन्यास ग्रहण करके स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। 'वेदों की ओर लौटो' का नारा देते हुए मुसलमान एवं ईसाई बने हिन्दुओं को 'पुन: शुद्धि आन्दोलन' द्वारा हिन्दू धर्म में वापस लाया गया। आर्यसमाज ने हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को बढ़ावा दिया।

मुगल शासकों से सत्ता अंग्रेजों के हाथ में आ गई थी। इससे रोजगार और कार्यालयों की भाषा फारसी से बदलकर अंग्रेजी हो गई थी। इस कारण मुसलिम शिक्षित वर्ग एवं कुलीन वर्ग के लोगों का रोजगार छिन गया था। वे रोजगार छिनने और सत्ता समाप्त होने की पीड़ा का अनुभव कर रहे थे। ऐसे में बंगाल में फराजिस आन्दोलन शुरू हुआ। इसका नेतृत्व शरीयतउल्ला ने किया। दिल्ली में इस आन्दोलन का नेतृत्व बलियतुल्लाह द्वारा किया गया। इस आन्दोलन ने इस्लामी शुद्धिकरण पर बल दिया। इसी तरह 'तारीख-ए-मुहयदिया आन्दोलन' टीटू मीर द्वारा शुरू किया गया। इस आन्दोलन को सैय्यद अहमद बरेलवी ने आगे बढ़ाया। ये सभी इस्लामी परम्पराओं के समर्थक थे।

सैय्यद अहमद खान (1814-1898 ई.) ने मुसलिमों की स्थिति सुधारने के लिए आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा की वकालत की। सैयद अहमद खान ने 1866 ई. में ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन की स्थापना की। उन्होंने 1875 ई. में मुहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की, जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बना। सैयद अहमद खान का आन्दोलन न केवल शैक्षिक रूप से मुसलिम समाज को आधुनिकता की ओर ले गया, बल्कि इसने सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को भी दूर करने का प्रयास किया।

इस प्रकार 19वीं शताब्दी में सुधार आन्दोलनों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जन-जागरण पैदा किया। इन आन्दोलनों द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक बुराइयों को शिक्षा के प्रचार-प्रसार से दूर करने का प्रयास किया गया। साथ ही, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनमत तैयार करके राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की नींव रखी गई।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. भारत में जन-जागरण का काल किस सदी को माना जाता है?

   (क) 17वीं (ख) 18वीं

   (ग) 19वीं (घ) 20वीं

2. राजा राममोहन राय ने 1814 ई. में किस सभा की स्थापना की?

(क) प्रार्थना सभा (ख) सिंह सभा

(ग) आत्मीय सभा (घ) बाल सभा

3. 1856 ई. में लॉर्ड डलहौजी की सहायता से विधवा पुनर्विवाह कानून किसने बनवाया?

(क) राजा राममोहन राय (ख) विलियम बेंटिंक

(ग) आत्मीय सभा (घ) इनमें से कोई नहीं

4. सत्यार्थ प्रकाश की रचना किसने की?

(क) विवेकानन्द (ख) दयानन्द सरस्वती

(ग) रामकृष्ण (घ) सैयद अहमद खान

5. खाली जगहों में सही शब्द भरिए–

(क) 1875 ई. में .... में आर्य समाज की स्थापना की गई। (बम्बई/अलीगढ़)

(ख) आत्माराम पांडुरंग ने .... में 'प्रार्थना समाज' का गठन किया। (1865 ई./1867 ई.)

(ग) 1902 ई. में .... ने काँगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की। (मुंशीराम/लाला लाजपतराय)

(घ) .... ने 1866 ई. में ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन की स्थापना की। (सैयद अहमद खान/लाला हंसराज)

7.4 1857 का संघर्ष

आप पहले भी पढ़ चुके हैं कि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 31 दिसम्बर, 1600 ई. को हुई। व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी पुर्तगाली, डच, फ्रेंच और डेनिश कंपनियों से जीत गई। वांडियावाश के युद्ध में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने फ्रांसीसी कंपनी को अंतिम रूप से पराजित किया।

1757 ई. में पलासी के युद्ध में क्लाइव ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को पराजित किया। 1764 ई. में बक्सर के युद्ध में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना ने मीर कासिम, शुजाउद्दौला और मुगल बादशाह शाहआलम की संयुक्त सेना को पराजित किया। कंपनी ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर दीवानी अधिकार प्राप्त किया। अब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापारिक कंपनी से राजनैतिक शक्ति बन गई।

1765 ई. में बंगाल में क्लाइव ने द्वैध शासन को लागू किया। इसने बंगाल को न केवल अराजकता की स्थिति में डाला, बल्कि बंगाल लूट का केन्द्र बन गया। 1773 ई. में रेग्यूलेटिंग एक्ट के द्वारा कंपनी के भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रयास किया गया। लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 ई. में बंगाल में स्थायी बन्दोबस्त लागू किया। इससे किसानों पर भू-राजस्व का बोझ बढ़ा, जिसने किसानों की स्थिति खराब कर दी।

लॉर्ड वेलेजली ने 1798 ई. के बाद सहायक संधि लागू की। इसके अनुसार संधि पर हस्ताक्षर करने वाले शासकों को सुरक्षा के लिए अंग्रेजी सेना रखनी पड़ती थी। अंग्रेजी सेना का खर्च भी उन्हीं को वहन करना होता था। ब्रिटिश रेजिडेन्ट राज्य के अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप कर सकता था। सहायक संधि को स्वीकारने वाला पहला राज्य हैदराबाद था। अन्य राज्य थे कोचीन, जयपुर, त्रावणकोर और मैसूर। सहायक संधि स्वीकार कर भारतीय रियासतें अपनी स्वतंत्रता खो बैठीं।

लॉर्ड वेलेजली की साम्राज्यवादी विस्तार की नीति को लॉर्ड डलहौजी ने 'हड़प नीति' द्वारा नया रूप दिया। उसने सतारा, जयपुर, संभलपुर, नागपुर, झाँसी को प्राकृतिक उत्तराधिकारी के अभाव में अंग्रेजी राज्य में मिलाया। उसने दत्तक पुत्रों को मान्यता नहीं दी, जिसके कारण नाना साहब और लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों का विरोध किया। अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर इस राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। इससे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध देशी रियासतों में असंतोष, गुस्सा व आक्रोश पैदा हुआ।

भारत में उद्योग धंधों के अभाव तथा इंग्लैंड की कपड़ा मिलों के सस्ते उत्पाद ने भारतीय बुनकरों एवं श्रमिकों की दशा खराब कर दी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारतीय वस्तुओं पर अधिक कर लगाया गया। ब्रिटिश माल पर कम कर लगाकर भारतीय व्यापार को चौपट कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार की नीतियों से व्यापारियों का व्यापार करना लाभप्रद नहीं रहा, जिससे उनमें असंतोष पैदा हुआ।

लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने सती प्रथा के विरुद्ध कानून बनाया। लॉर्ड डलहौजी ने विधवा पुनर्विवाह कानून बनाया। इन कानूनों को लोगों ने धार्मिक एवं सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप माना। इससे लोगों में अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष पैदा हुआ।

चित्र 7.10 : मंगल पांडे

चित्र 7.11 : बहादुर शाह जफर

चित्र 7.12 : रानी लक्ष्मीबाई

चित्र 7.13 : बेगम हजरत महल

1857 के संघर्ष के नायक व उनसे संबंधित स्थान

मंगल पांडेय	–	बैरकपुर (बंगाल)
सैनिक	–	मेरठ छावनी
बहादुर शाह जफर	–	दिल्ली
नाना साहब	–	कानपुर
बेगम हजरत महल	–	लखनऊ
रानी लक्ष्मीबाई	–	झांसी
वीर कुंवरसिंह	–	जगदीशपुर (आरा)

ब्रिटिश सेना में कार्यरत भारतीय सैनिक अपने पद, वेतन विसंगति, भेदभाव तथा अमानवीय व्यवहार से दुखी थे। भारतीय सैनिकों ने 10 मई, 1857 ई. को मेरठ छावनी से संघर्ष की शुरुआत की। भारतीय समाज में अंग्रेजों से दुखी किसान, बुनकर, व्यापारी, देशी राजा, जमींदार व अन्य वर्ग भी इस संघर्ष में शामिल हो गए। संसाधनों के अभाव, नेताओं के बीच एकता का अभाव एवं बेहतर तालमेल की कमी के कारण 1857 ई. का संघर्ष असफल रहा परन्तु उसने अपनी असफलता में ही सफलता के बीज बो दिए। इसने सभी वर्गों को एकजुट किया। इसी के आधार पर बाद में राष्ट्रीय आन्दोलन द्वारा भारत को आजादी मिली।

पाठगत प्रश्न 7.4

1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए–

(क) यूरोपीय कंपनियों की व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी विजयी रही। ☐

(ख) लॉर्ड वेलेजली ने 'हड़प नीति' लागू की। ☐

(ग) सहायक संधि स्वीकार करने वाला प्रथम राज्य हैदराबाद था। ☐

(घ) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय माल पर कम कर लगाया, ब्रिटिश माल पर अधिकं ☐

2. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) .... को कुशासन के आरोप में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। (सतारा/अवध)

(ख) सैनिकों ने .... में 10 मई, 1857 ई. को संघर्ष शुरू किया। (दिल्ली/मेरठ)

(ग) .... की वृद्धि से किसान ईस्ट इंडिया कंपनी से दु:खी थे। (भू-राजस्व/व्यापार कर)

(घ) दत्तक पुत्रों को उत्तराधिकारी की मान्यता न मिलने से नाना साहब और .... ने अंग्रेजों का विरोध किया। (लक्ष्मीबाई/शाह आलम)

आपने क्या सीखा

- सर्वप्रथम पुर्तगाली लोग भारत आए और बाद में डच, फ्रांसीसी, अंग्रेज और डेनिश। यूरोपीय कंपनियों के बीच व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी जीत गई और उसने अपना प्रभुत्व कायम किया। बाद में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुई।
- ब्रिटिश साम्राज्य की गलत नीतियों ने भारतीय कृषि-व्यवस्था, व्यापार एवं उद्योग धंधों को नष्ट कर दिया। इससे भारतीय समाज गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी का शिकार हो गया।
- 19वीं सदी में समाज एवं धर्म सुधारकों ने सामाजिक व धार्मिक तथा शिक्षा सुधार आन्दोलन चलाकर जन-जागरण फैलाया। इन आन्दोलनों ने भारतीय समाज को आधुनिक बनाया।

- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति से सेना, किसान, मजदूर, बुनकर, जमींदार, देशी शासक, व्यापारी सभी गुस्से में थे। उन्होंने 1857 ई. में अवसर पाकर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध संघर्ष किया।
- 1857 ई. के संघर्ष के पीछे ब्रिटिश आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक सभी नीतियाँ जिम्मेदार थीं।

आइए, करके देखें

1. 1857 ई. के संघर्ष के कारणों से संबंधित सूचना इकट्ठा कर चर्चा कीजिए।
2. 1857 ई. में संघर्ष में शामिल होने वाले समाज के विभिन्न वर्गों का पता लगाइए। उनके संघर्ष में शामिल होने के कारणों के बारे में जानिए।

पाठांत प्रश्न

1. सही वाक्य पर ✓ का तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए–

(क) वास्को डि गामा इंग्लैंड का निवासी था। ☐

(ख) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 31 दिसम्बर, 1600 ई. को हुई। ☐

(ग) लाला हरदयाल ने आत्मीय सभा की स्थापना की। ☐

(घ) मीर कासिम अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से हटाकर मुंगेर ले गया। ☐

(च) इंग्लैंड की कपड़ा मिलों के सस्ते उत्पाद ने भारतीय बुनकरों की दशा सुधार दी। ☐

2. सही मिलान कीजिए–

(क)	रेग्यूलेटिंग एक्ट	(I)	1828 ई.
(ख)	आत्मीय सभा	(II)	1857 ई.
(ग)	ब्रह्म समाज	(III)	1773 ई.
(घ)	आर्य समाज	(IV)	1866 ई.
(च)	ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन	(V)	1814 ई.
(छ)	मेरठ छावनी से संघर्ष प्रारम्भ	(VI)	1875 ई.

3. महारानी एलिजाबेथ प्रथम के राजदूत सर टॉमस रो किस वर्ष जहाँगीर से मिले थे?

(क) 1512 ई. में (ख) 1612 ई. में

(ग) 1650 ई. में (घ) 1618 ई. में

4. अंग्रेजों ने किस वर्ष पांडिचेरी पर अधिकार किया?

(क) 1756 ई. में (ख) 1760 ई. में

(ग) 1757 ई. में (ग) 1761 ई. में

5. ब्रह्म समाज की स्थापना किसने की?

(क) केशव चन्द्र सेन ने (ख) देवेन्द्र नाथ टैगोर ने

(ग) राजा राम मोहन राय ने (ग) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने

6. सहायक संधि किसने लागू की?

(क) लॉर्ड वेलेजली ने (ख) लॉर्ड क्लाइव ने

(ग) लॉर्ड कार्नवालिस ने (ग) लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(अ) वास्को डि गामा कौन था?

....

(ब) सहायक संधि किसने लागू की?

....

(स) रैयतवाड़ी कहाँ लागू की गई?

....

(द) 19 वीं सदी के कम से कम तीन समाज एवं धर्म सुधारकों के नाम लिखिए।

....

(य) आर्यसमाज की स्थापना कब हुई और किसने की?

....

(र) 1857 ई. के संघर्ष की शुरुआत कब और कहाँ से हुई थी?

....

(ल) पलासी के युद्ध के मुख्य कारण क्या थे?

....

....

....

....

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

7.1

1. I.	(घ)	II.	(च)	III.	(ख)
IV.	(ग)	V.	(क)		

2. (क) पुर्तगाल (ख) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी
   (ग) सूरत (घ) सहायक संधि
   (च) लॉर्ड डलहौजी

7.2

1. (क) ✓ (ख) X (ग) ✓
   (घ) ✓ (च) ✓√
2. (क) 1784 ई. (ख) कार्नवालिस
   (ग) रैयतवाड़ी (घ) महालवाड़ी

7.3

1. (ग) 2. (ग)
3. (घ) 4 (ख)
5. (क) बम्बई (ख) 1867 ई.
   (ग) मुंशीराम (घ) सैयद अहमद खान

7.4

1. (क) ✓ (ख) ✗

   (ग) ✓ (घ) ✗

2. (क) अवध (ख) मेरठ

   (ग) भू-राजस्व (घ) लक्ष्मीबाई

पाठांत प्रश्न

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗

   (घ) ✓ (च) ✗

2. (क) 1773 ई. (ख) 1814 ई. (ग) 1828 ई.

   (घ) 1875 ई. (च) 1866 ई. (छ) 1857 ई.

3. 1612 ई. में
4. 1761 ई. में
5. राजा राममोहन राय ने
6. लार्ड वेलेजली ने
7. (अ) वास्को डि गामा पुर्तगाली यात्री था, जो 1498 ई. में भारत आया।

   (ब) लार्ड वेलेजली ने

   (स) मद्रास और बम्बई में।

   (द) राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, केशवचन्द्र सेन, सैयद अहमद खान।

   (य) 1875 ई. में, दयानन्द सरस्वती ने।

   (र) 10 मई, 1857 ई. को, मेरठ छावनी से।

8

ब्रिटिश राज और स्वतंत्र भारत

1757 ई. के पलासी युद्ध और 1764 ई. के बक्सर युद्ध के बाद ब्रिटिश कंपनी बंगाल में शासक बन बैठी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने शासन-तंत्र में अनेक परिवर्तन किए। कृषि क्षेत्र में नई भू-लगान प्रणाली शुरू की। भारत में जमींदारी प्रथा को कंपनी ने बढ़ावा दिया। कंपनी ने नई न्याय-व्यवस्था एवं पुलिस-व्यवस्था को शुरू किया। अंग्रेजी शिक्षा एवं रेल, डाक, तार तथा सार्वजनिक निर्माण विभाग शुरू किया। राजा राम मोहन राय के अनुरोध पर 'सती-प्रथा' को कंपनी ने प्रतिबंधित किया। 1857 ई. के बाद कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया गया। कानून बनाकर भारत को ब्रिटिश महारानी के शासन के अधीन कर दिया गया। बाद में ब्रिटिश शासन की अत्याचारी नीति ने 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' को राष्ट्रीय आन्दोलन चलाने पर मजबूर किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के कारण भारत 15 अगस्त, 1947 ई. को ब्रिटिश सत्ता से आजाद हुआ। परन्तु विभाजन के कारण अनेक समस्याएँ थीं। भारत ने इनका डटकर मुकाबला किया और लोकतांत्रिक एवं शक्तिशाली देश के रूप में खुद को स्थापित किया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- ब्रिटिश शासन तंत्र में हुए परिवर्तन के प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत एवं इसके प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे और
- स्वतंत्रता के बाद भारत की स्थिति को स्पष्ट कर सकेंगे।

8.1 ब्रिटिश शासन तंत्र में परिवर्तन

आप पढ़ चुके हैं, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1612 ई. में भारत में पाँव पसारे। ब्रिटेन ने महारानी एलिजाबेथ प्रथम के दूत सर टॉमस रो को मुगल शासक जहाँगीर के दरबार में भेजा। जहाँगीर ने टोमस रो को सूरत में एक व्यापारिक केन्द्र स्थापित करने की अनुमति दी। 1757 ई. में प्लासी का युद्ध हुआ। उसके बाद भारत में ब्रिटिश शासन की औपचारिक शुरुआत हो गई। बक्सर युद्ध के बाद 1764 ई. में ब्रिटिश कंपनी व्यापारिक कंपनी से राजनैतिक शक्ति में बदल गई। ब्रिटिश कंपनी को बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा पर दीवानी अधिकार प्राप्त हो गए। उसके बाद धीरे-धीरे शेष भारत में भी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन स्थापित हो गया।

बंगाल में क्लाइव ने 1765 ई. में द्वैध शासन लागू किया। इससे बंगाल में अराजकता एवं भ्रष्टाचार का माहौल पैदा हुआ। कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा 1773 ई. में रेग्यूलेटिंग एक्ट लाया गया। कलकत्ता में इम्पीरियल कोर्ट की स्थापना की गई। भू-राजस्व वसूली के लिए इजारेदारी व्यवस्था लागू हुई।

लॉर्ड कार्नवालिस ने बंगाल में स्थायी बंदोबस्त (इस्तमरारी) व्यवस्था 1793 ई. में लागू की। प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए पुलिस विभाग की स्थापना की। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के कार्यों को नियंत्रित करने के लिए 1813, 1833 और 1853 ई. के चार्टर बनाए गए। इसी दौरान लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने 'सती प्रथा' को गैर कानूनी करार दिया।

चित्र 8.1 : लार्ड विलियम बैंटिंक

शिक्षा के क्षेत्र में लॉर्ड मैकाले ने 1835 ई. में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट में अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने एवं अंग्रेजी शिक्षा को लागू करने का सुझाव दिया। लॉर्ड डलहौजी ने आधुनिक भारत की आधारशिला रखी। उसने रेल, डाक, तार व सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना करवाई। उसके काल में ही वुड डिस्पैच द्वारा 1854 ई. में आधुनिक भारतीय शिक्षा की नींव रखी गई। कलकत्ता, मद्रास, बम्बई में विश्वविद्यालय खोलने का प्रस्ताव सरकार को भेजा गया। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के अनुरोध पर लॉर्ड डलहौजी ने विधवा पुनर्विवाह कानून 1856 ई. में बनाया।

'हड़प-नीति' के द्वारा भारतीय रियासतों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाया गया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन-तंत्र में हुए परिवर्तनों से किसानों, व्यापारियों, जमींदारों और देशी शासकों पर बुरा असर पड़ा। सैनिकों द्वारा 1857 ई. में विद्रोह शुरू कर दिया गया। इस संघर्ष में भारतीय नागरिक भी शामिल हो गए। इस तरह 1857 ई. की क्रांति का जन्म हुआ। इसके बाद 1858 ई. का अधिनियम बनाकर ब्रिटिश सरकार ने भारत के शासन को कंपनी से मुक्त कर सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन कर दिया।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर × का निशान लगाइए–

(क) अकबर ने सर टॉमस रो को व्यापारिक केन्द्र स्थापित करने की अनुमति दी। ☐

(ख) बंगाल में स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था लॉर्ड कार्नवालिस ने लागू की। ☐

(ग) लॉर्ड डलहौजी ने आधुनिक भारत की नींव डाली। ☐

2. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

वुड डिस्पैच, लॉर्ड डलहौजी

(क) .... ने विधवा पुनर्विवाह कानून 1856 ई. में बनाया।

(ख) भारतीय आधुनिक शिक्षा की नींव .... द्वारा रखी गई।

8.2 भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत और प्रभाव

19 वीं सदी में भारत की अर्थ-व्यवस्था कृषि पर आधारित थी। भारत के लोग अपने-अपने क्षेत्र में अपनी भाषा बोलते थे। देश-भक्ति की भावना केवल अपने क्षेत्र और संस्कृति तक सीमित थी। राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता की भावना का अभाव था। 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर अंग्रेज यहाँ शासन कर रहे थे।

भारत में राष्ट्रीयता की भावना का विकास ब्रिटिश शासन के विरोध के कारण हुआ। अंग्रेजी शासन का विरोध स्थानीय शासकों एवं लोगों ने किया। परन्तु यह विरोध शासकों, किसानों, कारीगरों, सैनिकों तथा जनजातीय लोगों ने एकजुट होकर नहीं किया। 1857 ई. के संघर्ष में भी एकजुटता एवं राष्ट्रीयता का अभाव था। यही इस संघर्ष की असफलता का कारण भी था।

ब्रिटिश शासन ने भारतीय संस्कृति को नुकसान पहुँचाने की कोशिश की। लोग अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिए ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एकजुट होने लगे। परन्तु भारत में राष्ट्रीयता की भावना को अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों ने ठीक से पनपने नहीं दिया। ब्रिटिश शासन भारत से मुनाफा, वेतन, ब्याज, पेंशन, भू-राजस्व आदि के रूप में तमाम धन ब्रिटेन भेज देता था। इससे भारत गरीब और आर्थिक रूप से जर्जर होता जा रहा था। ब्रिटिश आर्थिक नीति ने किसान, मजदूर, व्यापारी, बुनकर, जमींदार सबको कमजोर किया। इससे ये लोग ब्रिटिश शासन का विरोध करने लगे।

ब्रिटिश शासन की अत्याचारी नीति ने भी लोगों को एकजुट किया। धीरे-धीरे एकता और विरोध में वृद्धि होती गई और राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन को जन्म दिया। क्रांतिकारी नेताओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन को आगे बढ़ाया। बाल गंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, दादाभाई नैरोजी आदि ने अपने प्रयासों से अंग्रेजों के विरुद्ध जनमत तैयार किया। भारतीय रेल, प्रेस तथा आधुनिक शिक्षा ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन को तेज किया। धीरे-धीरे यह आंदोलन कई चरणों में आगे बढ़ता गया, जैसे- 1917 ई. में गाँधीजी का 'चंपारण आन्दोलन', 1920-22 ई. में 'असहयोग आन्दोलन', 1930 ई. में 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' (नमक सत्याग्रह)। अंत में 1942 ई. में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को लक्ष्य तक पहुँचाया। इसके साथ ही हमारे देशभक्त क्रांतिकारियों ने अपने प्रयासों द्वारा अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश किया। शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खान, राजगुरू, सुखदेव आदि ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

चित्र 8.2 : बाल गंगाधर तिलक

चित्र 8.3 : गोपालकृष्ण गोखले

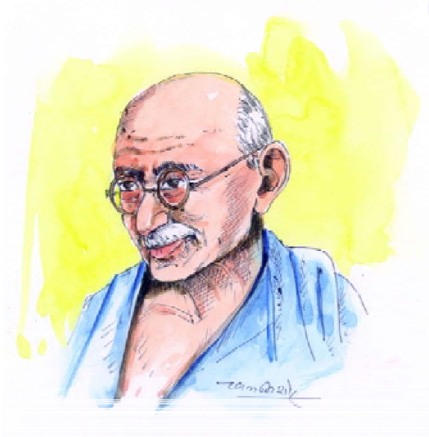

चित्र 8.4 : महात्मा गांधी **चित्र 8.5 : जवाहरलाल नेहरू**

अंग्रेज भी भारतीय स्वतंत्रता के लिए सोचने पर मजबूर हो गए। लॉर्ड बैवेल ने 1945 ई. में कांग्रेस, मुस्लिम लीग तथा अन्य दलों के नेताओं की बैठक शिमला में आयोजित की। मुस्लिम लीग द्वारा अलग क्षेत्र की माँग एवं कांग्रेस के असंतोष के कारण 'शिमला सम्मेलन' असफल हो गया।

चित्र 8.6 : सुभाषचन्द्र बोस **चित्र 8.7 : दादाभाई नौरोजी**

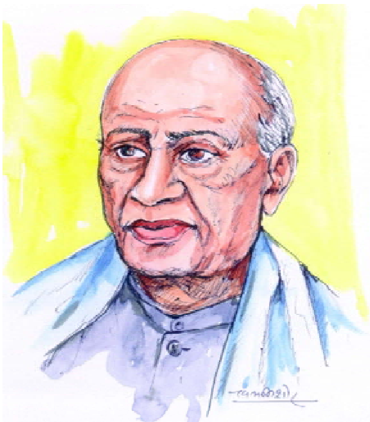

चित्र 8.8 : लाल लाजपत राय **चित्र 8.9 : सुभाषचन्द्र बोस**

चित्र 8.10 : अबुल कलाम आजाद

1946 ई. में अंग्रेजी शासन ने भारत के संविधान एवं संविधान सभा के निर्माण के लिए कैबिनेट मिशन का गठन किया। मुस्लिम लीग की अलग संविधान सभा की माँग ठुकरा दी गई। इसके विरोध में मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस शुरू कर दिया। इससे पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे शुरू हुए। ये दंगे पंजाब और बंगाल में भयानक रूप से फैले थे। गाँधीजी ने अकेले ही नोआखाली (बंगाल) में दंगा रोकने का प्रयास किया। दंगों के कारण सभी पक्षों ने भारत के विभाजन पर सहमति दे दी। केवल गाँधी जी अंत तक विभाजन के विरुद्ध रहे। 30 जनवरी, 1948 ई. को गांधी जी की हत्या कर दी गई। लम्बे संघर्ष के बाद राष्ट्रीय आंदोलन सफल हुआ और 15 अगस्त, 1947 ई. को भारत आजाद हो गया।

चित्र 8.11 : शहीद भगत सिंह

चित्र 8.12 : चंद्रशेखर आजाद

चित्र 8.13 : अशफाक उल्ला खान

चित्र 8.14 : सुखदेव

पाठगत प्रश्न 8.2

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-

(क) 19वीं सदी में भारत की अर्थ-व्यवस्था .... पर आधारित थी। (उद्योग / कृषि)

(ख) ब्रिटिश शासन ने भारतीय संस्कृति को .... पहुँचाने की कोशिश की। (नुकसान / लाभ)

(ग) सन् 1942 ई. में भारत .... आंदोलन शुरू हुआ। (छोड़ो / तोड़ो)

2. सही मिलान कीजिए-

(अ) चंपारण आन्दोलन	(I)	1930 ई.
(ब) असहयोग आन्दोलन	(II)	1942 ई.
(स) सविनय अवज्ञा आन्दोलन	(III)	1917 ई.
(द) भारत छोड़ो आन्दोलन	(IV)	1920-22 ई.

8.3 स्वतंत्रता के बाद भारत

15 अगस्त, सन् 1947 ई. को भारत को आजादी तो मिल गई, परन्तु इस समय भारत के सामने काफी चुनौतियाँ थीं। ये चुनौतियाँ थीं – संविधान का निर्माण, शासन के स्वरूप का निर्धारण, एकीकृत भारत का निर्माण, भारत-पाकिस्तान की सीमा एवं संपत्ति का निर्धारण, दंगा और विभाजन से प्रभावित लोगों का पुनर्वास तथा आर्थिक रूप से जर्जर भारत का पुनर्निर्माण आदि।

सरदार पटेल ने 565 देशी रियासतों को मिलाकर एकीकृत भारत का निर्माण किया। हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर रियासतों को मिलाने को लेकर कुछ समस्याएँ थीं। हैदराबाद और जूनागढ़ को जनता की माँग पर सैन्य कार्यवाही द्वारा भारत में शामिल किया गया। कश्मीर प्रदेश को विलय पत्र पर महाराजा हरि सिंह के हस्ताक्षर द्वारा भारत का अंग बनाया गया। बाद में ऑपरेशन विजय द्वारा गोवा, पांडिचेरी आदि को 1961 ई. में भारत में शामिल किया गया।

भारतीय संविधान का निर्माण संविधान सभा द्वारा 1946 ई. में शुरू हुआ। भारतीय संविधान 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में बनकर तैयार हुआ। संविधान सभा के सदस्यों ने इसे 26 नवम्बर, 1946 ई. को संविधान सभा में पारित किया। भारतीय संविधान को 26 जनवरी, 1950 ई. को लागू कर भारत को लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया।

15 मार्च, 1950 ई. को योजना आयोग का गठन किया गया। देश के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ अपनाई गई। 1951–52 ई. में देश में प्रथम आम चुनाव कराकर देश में लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना की गई।

देश के आर्थिक विकास के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि को बढ़ावा दिया गया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में उद्योगों को प्रमुखता दी गई। इससे उत्पादन बढ़ा और रोजगार के अवसर बढ़े। विश्व स्तर पर भारत ने अपनी विदेश नीति में गुट निरपेक्षता को अपनाया। गुट निरपेक्ष आन्दोलन का गठन कर इसका नेतृत्त्व किया।

8.15 : भारतीय संविधान

भारत ने क्षेत्रीय स्तर पर पंचशील का सिद्धान्त देकर पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध बनाने का प्रयास किया। दक्षेस की स्थापना कर दक्षिण-एशिया में शांति और सौहार्द बनाने का प्रयास किया। परन्तु चीन के साथ 1962 ई. में युद्ध हुआ और अच्छे संबंध बनाने में अड़चने पैदा हो गईं। तब से भारत और चीन के बीच सीमा विवाद है। पाकिस्तान के साथ 1947, 1965, 1971 ई. में युद्ध हो चुके हैं। इसके बाद कारगिल युद्ध हो चुका है। भारत और पाक के बीच 1966 ई. में 'ताशकंद समझौता' और 1972 ई. में 'शिमला समझौता' हुआ। आगरा शिखर वार्ता द्वारा भी संबंध सुधारने के प्रयास किए गए। लेकिन दोनों देशों के बीच संबंध अच्छे नहीं बन पाए। भारत-पाक के बीच तनावपूर्ण संबंध का कारण सीमा विवाद, कश्मीर समस्या एवं आतंकवाद है।

विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उल्लेखनीय प्रगति की। स्वतंत्रता के समय भारत गरीब, पिछड़े और अविकसित देश की श्रेणी में था। स्वतंत्रता के बाद तेजी से प्रगति हुई। विकास के पथ पर लगातार बढ़ते हुए हमारा भारत आज विकासशील देश की अग्रणी श्रेणी में खड़ा है।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. **सही मिलान कीजिए–**

(क) योजना आयोग का गठन	(I) 1966 ई.
(ख) ताशकंद समझौता	(II) 15 मार्च, 1950 ई.
(ग) भारत-चीन युद्ध	(III) 1951-52 ई.
(घ) प्रथम आम चुनाव	(IV) 1962 ई.

आपने क्या सीखा

- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के दूत सर टॉमस रो द्वारा 1612 ई. में सूरत में व्यापारिक केन्द्र की स्थापना की गई।
- प्लासी और बक्सर युद्ध के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापारिक कंपनी से राजनैतिक कंपनी में बदल गई।
- 1757 ई. से 1858 ई. के बीच ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन में कई परिवर्तन हुए। 1858 ई. में कंपनी का शासन समाप्त कर ब्रिटिश राज के अधीन कर दिया गया।
- भारत में 1858 ई. के बाद राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत हुई और विभिन्न चरणों से गुजरते हुए भारत को आजादी मिली।

- स्वतंत्रता के बाद भारत ने तत्कालीन आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हुए पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा देश का विकास किया। क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने को भारत ने विश्व में स्थापित किया।

आइए, करके देखें

1. 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' से संबंधित जानकारी प्राप्त कर गाँधीजी की भूमिका की चर्चा कीजिए।
2. भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले महापुरुषों के चित्र इकट्ठे कर उनकी संक्षिप्त जीवनी तैयार कीजिए।

पाठांत प्रश्न

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने सती .... को गैर कानूनी बना दिया। (प्रथा/कथा)

(ख) '.................. डालो और राज करो' की नीति ब्रिटिश शासन ने अपनाई। (कूट/फूट)

(ग) लम्बे .... के बाद राष्ट्रीय आंदोलन सफल हुआ। (हर्ष/संघर्ष)

(घ) देश के .... के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ अपनाई गईं। (विकास/प्रकाश)

2. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए–

(अ) 19 वीं सदी में भारत की अर्थ-व्यवस्था कृषि पर आधारित थी। ☐

(ब) ब्रिटिश शासन ने भारतीय संस्कृति को बहुत फायदा पहुँचाया। ☐

(स) गांधीजी ने अंत तक भारत के विभाजन का समर्थन किया। ☐

(द) भारत-चीन का युद्ध 1962 ई. में हुआ। ☐

3. विधवा पुनर्विवाह कानून किसने बनाया?

....

4. भारत को आजादी कब मिली?

....

5. भारतीय संविधान का निर्माण कब शुरू हुआ?

....

6. भारतीय संविधान कितने दिन में बनकर तैयार हुआ?

....

7. आपके राज्य में आजादी के बाद विकास के कौन-कौन से कार्य हुए?

....

....

....

....

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

8.1

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
2. (क) लॉर्ड डलहौजी (ख) वुड डिस्पैच

8.2

1. (क) कृषि (ख) नुकसान (ग) छोड़ो
2. (अ) 1917 ई. (ब) 1920-22 ई.
   (स) 1930 ई. (द) 1942 ई.

8.3

1. (क) 15 मार्च, 1950 ई. (ख) 1966 ई.
   (ग) 1962 ई. (घ) 1951-52 ई.

पाठांत प्रश्न

1. (क) प्रथा (ख) फूट

(ग) संघर्ष (घ) विकास

2. (अ) ✓ (ब) ✗

(स) ✗ (द) ✓

3. लॉर्ड डलहौजी ने।

4. 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को।

5. सन् 1946 ई. में।

6. 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में।

9

हमारा भारत

हम अक्सर अपने चारों ओर फैले अलग-अलग प्रकार के भू-आकारें को देखते हैं। उनमें से कुछ बहुत ऊँचे होते हैं तो कुछ बहुत बड़े क्षेत्र में एकदम समतल। अगर हम भारत के बारे में देखें तो यह भिन्नता और भी ज्यादा दिखाई देती है। आखिर ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत क्षेत्रफल के आधार पर दुनिया का सातवाँ सबसे बड़ा देश है। यह तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है। इसके पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में हिन्द महासागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी फैली हुई है। उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत शृंखला इसकी सीमा बनाती है। अपनी इस विशालता और स्वरूप के कारण इसे भारतीय उपमहाद्वीप भी कहा जाता है। इस विशाल आकार के कारण ही यहाँ हर तरह के भू-रूप, जैसे पर्वत, पठार, मैदान, रेगिस्तान आदि पाए जाते हैं। इसी तरह यहाँ अनेक प्रकार की जलवायु भी मिलती है। इन सबने मिलकर भारत को अमूल्य प्राकृतिक सम्पदा प्रदान की है और इसे मृदा संसाधन, जल संसाधन, वनस्पतियों और जीव जगत में धनी बनाया है। इस पाठ में हम भारत के इन विविध भू-रूपों के बारे में पढ़ेंगे। साथ ही, हम भारत के मौसम, मिट्‌टी, जल, वनस्पतियों एवं जीव-जंतुओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारत के विस्तार के बारे में बता सकेंगे;
- भारत के पर्वत, पठार और मैदान के वितरण को बता सकेंगे;
- भारत की जलवायु कैसी है और मानसून क्या है, बता सकेंगे;

- मिट्टी के प्रकारों एवं उसके संरक्षण की विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- जल संसाधन का संतुलित उपयोग एवं संरक्षण कर सकेंगे;
- भारत की वन सम्पदा, इसके फायदे एवं वनों के विनाश के दुष्प्रभाव को जान कर इनका संरक्षण कर सकेंगे और
- भारत में जैव विविधता को जानकर उनका संरक्षण कर सकेंगे।

9.1 भारत का विस्तार

भारत एक बहुत ही विशाल देश है। इसकी विशालता का अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है। भारत विश्व के संपूर्ण भू-क्षेत्र का 2.42 प्रतिशत है। भारत के विस्तार को हम अक्षांश एवं देशांतर रेखाओं के संदर्भ में जान सकते हैं। इस तरह अगर हम देखें तो भारत की मुख्य भूमि का विस्तार $8^{o}4'$ से $37^{0}6'$ उत्तर अक्षांश और $68^{0}7'$ से $97^{0}25'$ पूर्व देशांतर के बीच है। इस प्रकार भारत उत्तर से दक्षिण में 3214 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम में 2933 किलोमीटर की लंबाई में फैला है। कर्क रेखा ($23^{0}30'$ उत्तरी अक्षांश) देश के लगभग मध्य से गुजरती है। देश का सबसे दक्षिणी बिन्दु इन्दिरा पॉइंट कहलाता है, जो $6^{0}4'$ दक्षिणी अक्षांश पर स्थित है। जबकि भारत की मुख्य भूमि का सबसे दक्षिणी बिन्दु कन्याकुमारी ($8^{0}4'$ उत्तरी अक्षांश) है।

क्या आप जानते हैं?

अक्षांश : अक्षांश वह कोणीय दूरी है जो पृथ्वी की सतह पर किसी स्थान के भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिणी होती हैं।

देशांतर : देशांतर पृथ्वी की सतह पर किसी स्थान का वह कोणीय दूरी है जो ग्रीनविच के प्रधान मध्यान्ह से पूर्व या पश्चित मापी जाती है।

कोणीय दूरी : केन्द्र से बिन्दुओं के बीच की दूरी को कोणीय दूरी कहा जाता है।

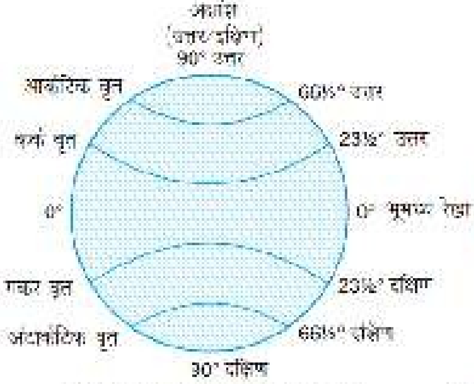

अक्षांश भूमध्य रेखा पर 0° से ध्रुवों पर 90° के बीच होता है।

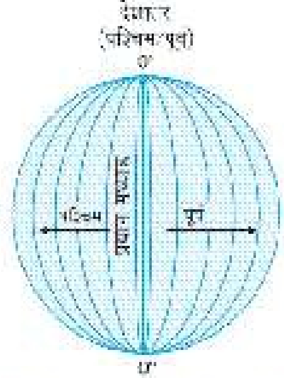

देशांतर ग्रीनविच के पास 0° से पूर्व-पश्चिम को 180° के बीच होता है।

भारत एशिया महाद्वीप का हिस्सा है और चीन के बाद एशिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। भारत तीन तरफ से पानी से घिरा हुआ है। इसके उत्तर-पश्चिम की ओर पाकिस्तान और अफगानिस्तान है। उत्तर में चीन, नेपाल और भूटान स्थित हैं। बांग्लादेश और म्यांमार इसके पूर्व में स्थित हैं। इसके दक्षिण में श्रीलंका और मालदीव हिन्द महासागर में स्थित हैं। भारत का उत्तरी भाग जहाँ भूमि से एशिया से जुड़ा हुआ है, वहीं इसके दक्षिण में विशाल हिन्द महासागर है। भारत के दक्षिणी भाग को पूर्व से बंगाल की खाड़ी और पश्चिम से अरब सागर ने घेर रखा है। भारत की स्थल सीमा 15,200 किलोमीटर लंबी है, जबकि इसकी समुद्र तट रेखा की लम्बाई 6100 किलोमीटर है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किलोमीटर है।

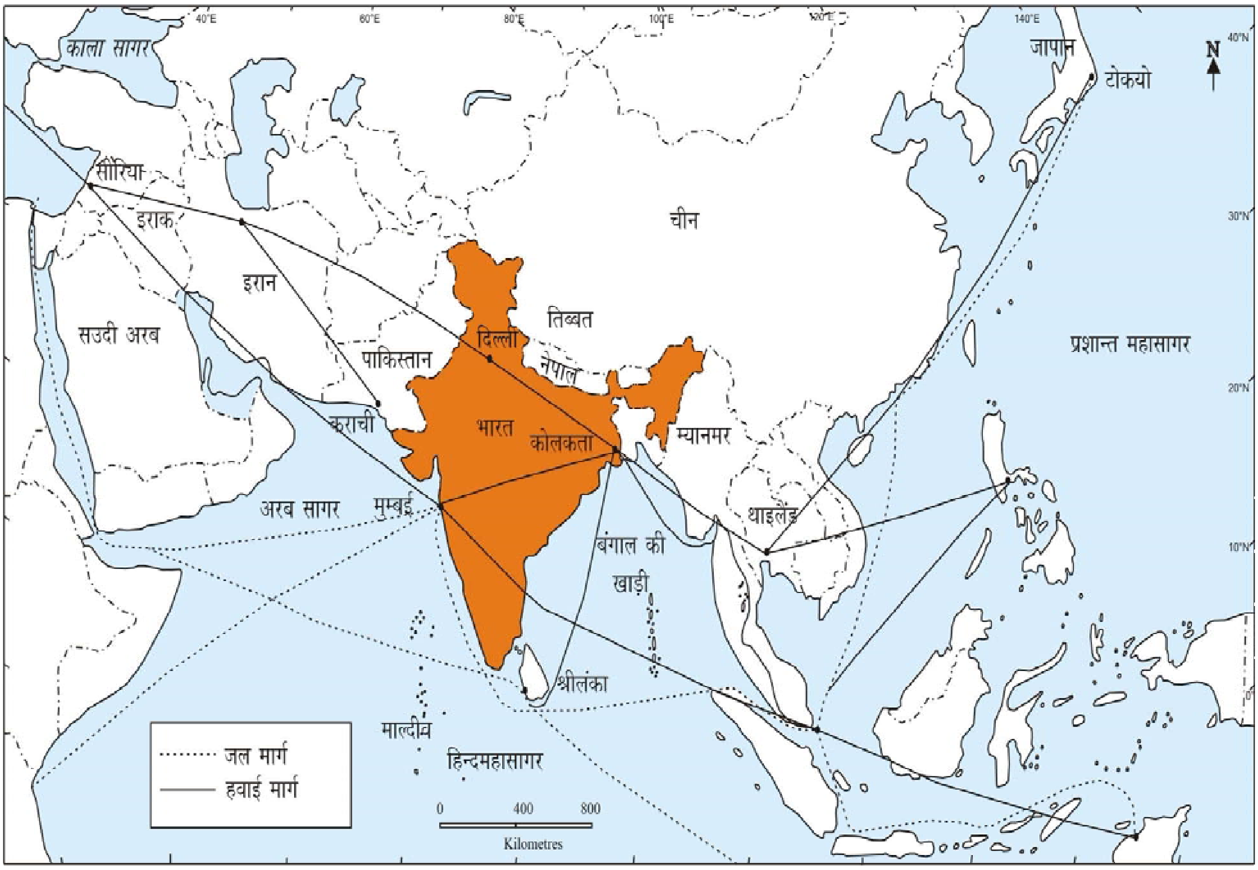

चित्र 9.1 : भारत की स्थिति

भारत की शासन-व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए राज्यों व संघ शासित राज्यों में बाँटा गया है। वर्तमान में भारत में 29 राज्य और 7 संघ शासित राज्य हैं।

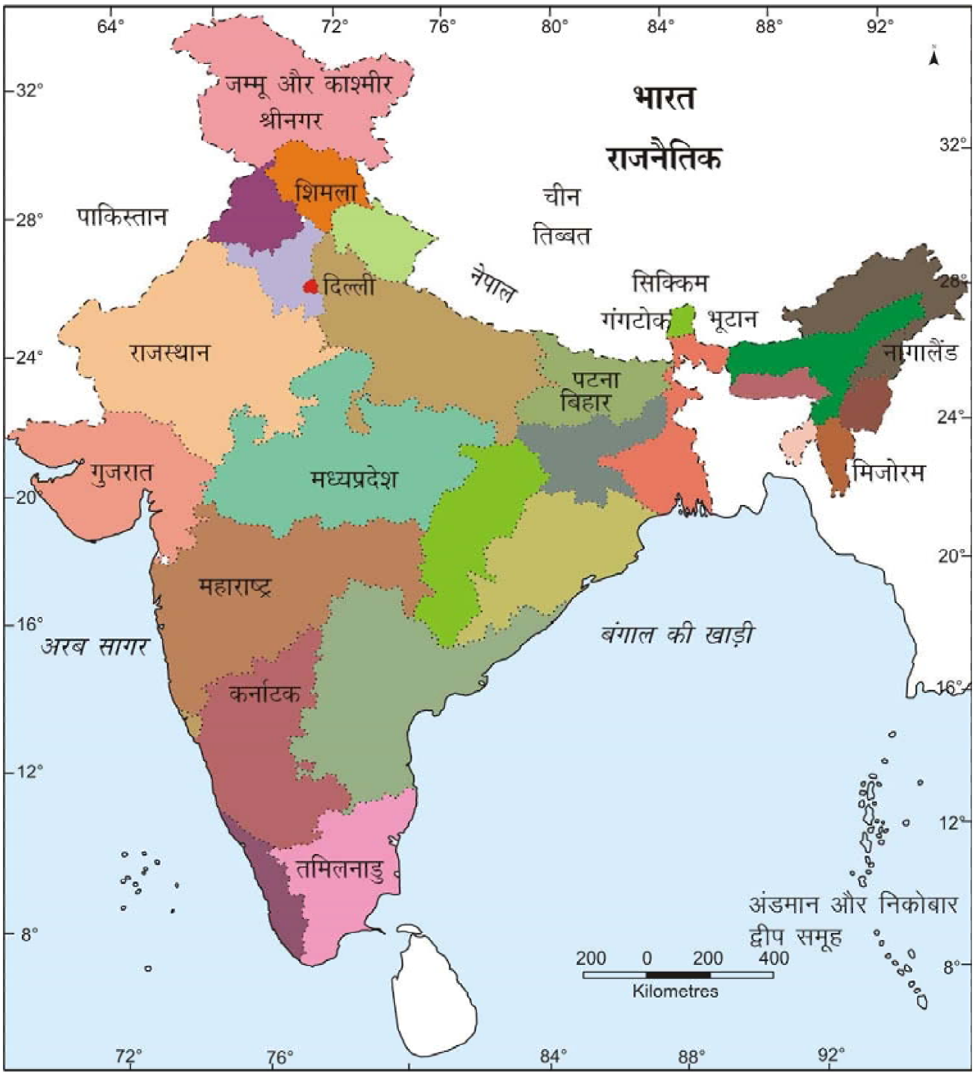

चित्र 9.2 : भारत : राजनैतिक

पाठगत प्रश्न 9.1

1. **निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरिए :**

(दूसरा, $80^{0}4'$-$37^{0}6'$, चीन, सातवाँ, $68^{0}7'$-$97^{0}25'$, पाकिस्तान, अफगानिस्तान)

(क) भारत विश्व का .... सबसे विशाल देश है।

(ख) भारत की मुख्य भूमि का विस्तार .... उत्तरी अक्षांश है।

(ग) भारत .... पूर्व देशांतर के बीच स्थित है।

(घ) भारत के उत्तर-पश्चिम में .... हैं।

(च) भारत .... के बाद एशिया का .... बड़ा देश है।

9.2 भारत के भू-रूप : पर्वत, पठार और मैदान

भारत भौगोलिक विविधता का देश है। यहाँ के कुछ भागों में ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं तो कहीं नदियों द्वारा निर्मित समतल मैदान फैले हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन भू-रूपो का निर्माण कैसे होता है? वास्तव में इनका निर्माण पृथ्वी के अंदर और बाहर होने वाली घटनाओं के कारण होता है। पृथ्वी के अंदर होने वाली हलचलों से पर्वत और पठार का निर्माण होता है, वहीं नदियों, वायु अथवा अन्य माध्यमों द्वारा मिट्टी के जमने से मैदानों का निर्माण होता है। भारत के इन भू-रूपों को मुख्य रूप से चार भागों में बाँटा गया है-

1. उत्तरी विशाल पर्वत समूह
2. उत्तरी विशाल मैदान
3. विशाल प्रायद्वीपीय पठार
4. तटीय मैदान और द्वीप समूह

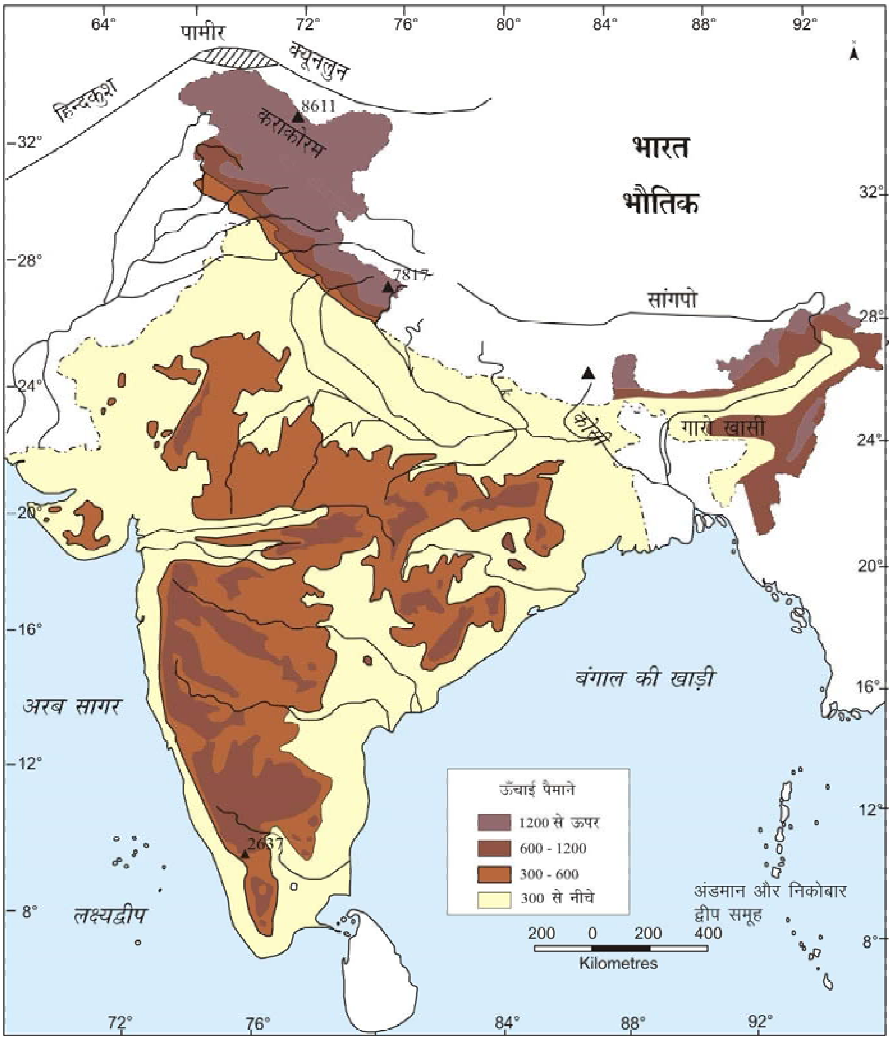

चित्र 9.3 : भारत के भौगोलिक विभाग

क. उत्तरी विशाल पर्वत समूह

यह भारत के उत्तरी भाग में फैले विशाल ऊँचे पर्वतों का समूह है। यह सदियों से उत्तर से आने वाले आक्रमणकर्ताओं से हमारी रक्षा करता रहा है, वहीं यह उत्तर की ठंडी हवाओं से भी हमें बचाता है। इसको तीन भागों में विभाजित किया गया है–

1. हिमालय
2. ट्रांस हिमालय
3. पूर्वांचल हिमालय

1. हिमालय – यह संसार की सबसे ऊँची पर्वत शृंखला है। यह भारत की उत्तरी सीमा के साथ–साथ पश्चिम में सिन्धु नदी से पूर्व की ओर ब्रह्मपुत्र नदी तक लगभग 2500 किलोमीटर की लंबाई में फैली है। इसकी चौड़ाई 100 से 150 किलोमीटर है। इसे भी तीन भागों में विभाजित किया गया है–

अ. हिमालय या हिमाद्रि : इसकी औसत ऊँचाई 6000 मीटर और चौड़ाई 120 से 190 किलोमीटर के बीच है। इसमें उत्तरी पर्वतमाला और चोटियाँ शामिल हैं; जो हमेशा बर्फ से ढकी रहती हैं। यहाँ कई ग्लेशियर भी हैं। यहीं से गंगा और यमुना नदियाँ भी निकलती हैं। विश्व की सबसे ऊँची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट यहीं पर नेपाल में है, जिसकी ऊँचाई 8848 मीटर है। हिमालय में भारत की सबसे ऊँची चोटी कंचनजंघा (8598 मीटर) स्थित है। यहाँ और भी कई ऊँची पर्वत चोटियाँ हैं, जैसे– मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत आदि।

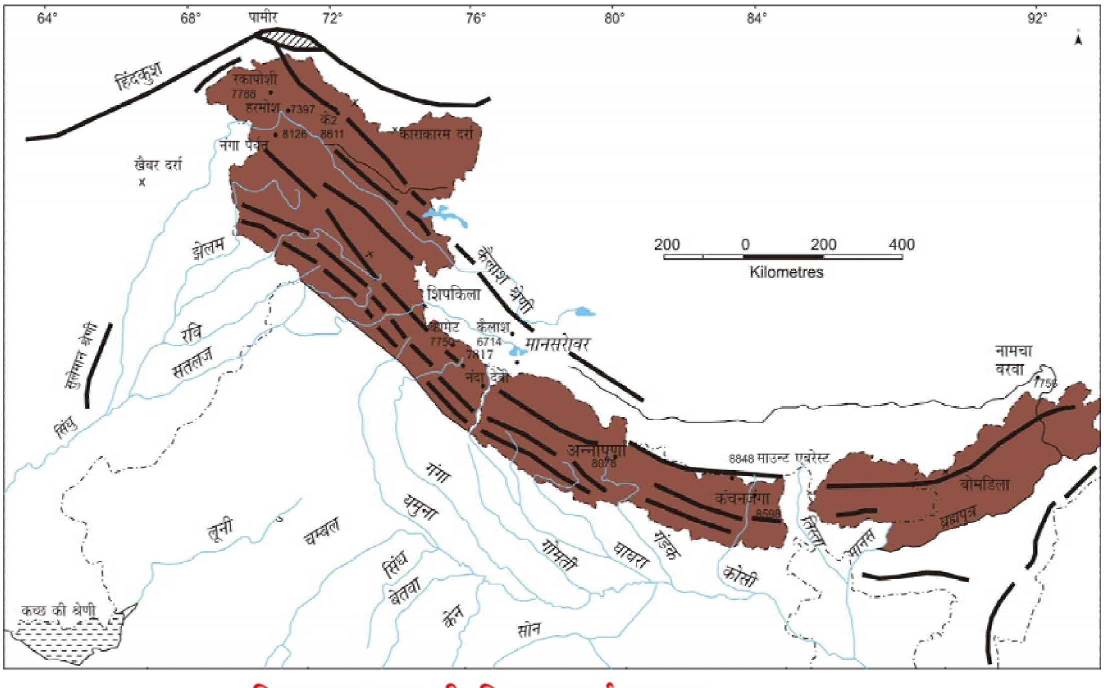

चित्र 9.4 : उत्तरी विशाल पर्वत समूह

ब. मध्य हिमालय या हिमाचल : इस श्रेणी की ऊँचाई 1000 से 4500 मीटर के बीच है। इसकी चौड़ाई लगभग 50 किलोमीटर है। यहाँ पीर पंजाल, धौलाधार और महाभारत प्रमुख श्रेणियाँ हैं। यह पर्वतीय भाग पर्यटन का प्रमुख क्षेत्र है। कई प्रसिद्ध केन्द्र, जैसे शिमला, डलहौजी, दार्जिलिंग, चकराता, मसूरी, नैनीताल आदि इसी क्षेत्र में स्थित हैं।

स. बाह्य हिमालय या शिवालिक : यह हिमालय की सबसे दक्षिणी पर्वत श्रेणी है। इसकी ऊँचाई भी सबसे कम लगभग 900 से 1100 मीटर है। शिवालिक पहाड़ी और मध्य हिमालय के बीच कई घाटियाँ हैं, जिन्हें दून कहा जाता है, जैसे देहरादून, कोटली दून, पाटली दून आदि। यह दून या घाटियाँ कृषि के प्रमुख क्षेत्र हैं।

2. **ट्रांस हिमालय** – यह हिमालय के समानान्तर पर्वत शृंखला है। जास्कर और लद्दाख इसकी प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ हैं। विश्व की दूसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी के-2 यहीं स्थित है। इसमें सबसे उत्तर में काराकोरम श्रेणी है।

3. **पूर्वांचल हिमालय** – यह उत्तरी पर्वत समूह के पूर्वी भाग में स्थित है। इसमें मिशनी, नागा और मिज़ो पहाड़ियाँ शामिल हैं। गारो, खासी और जयंतिया इसकी अन्य प्रमुख पहाड़ियाँ हैं। विश्व का सबसे ज्यादा वर्षा का क्षेत्र यहीं स्थित है।

ब. उत्तरी विशाल मैदान

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि उत्तरी भारत में एक बहुत ही विशाल भाग लगभग समतल क्षेत्र है। यह विस्तृत समतल भाग उत्तर का मैदान कहलाता है। इस मैदान का निर्माण तीन प्रमुख नदियों– सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों द्वारा पिछले लाखों वर्षों में लाए गए तलछट के जमाव से हुआ है। यह मैदान लगभग 7 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला है। इसका विस्तार पश्चिम में पंजाब से पूर्व में असम तक लगभग 2400 किलोमीटर की लंबाई में है। यह पूर्व में 150 किलोमीटर और पश्चिम में 300 किलोमीटर तक चौड़ा है। इस मैदान में नदियाँ सदानीरा हैं अर्थात् उनमें पानी सालभर प्रवाहित होता है क्योंकि यह ग्लेशियर से निकली हैं। यह मैदान बहुत ही उपजाऊ है। यह मैदान प्राचीन काल से ही सभ्यता का केन्द्र रहा है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसी सभ्यताएँ इसी मैदानी क्षेत्र में विकसित हुईं और फैलीं, क्योंकि यह भाग उपजाऊ था और पानी भी आसानी से उपलब्ध था। वर्तमान में भी यह क्षेत्र फसल उत्पादन में सबसे आगे है। यहाँ गेहूँ, चावल, गन्ना, दाल, तिलहन, जूट आदि बहुत अधिक मात्रा में पैदा किया जाता है। समतल होने के कारण यहाँ सिंचाई की भी काफी अच्छा व्यवस्था विकसित हुई है। इस मैदान को दो भाग में बाँटा जाता है :

1. **पश्चिमी मैदान** – यह सिंधु और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई तलछट से बना है।

2. **गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान** – यह गंगा, ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई तलछट से बना है।

ग. विशाल पठार

उत्तर के विशाल मैदान के दक्षिण में एक बहुत ही बड़ा तिकोने आकार का पठारी भाग है, जो कि लगभग 16 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा हिस्सा है। यह पठार कई अलग-अलग हिस्सों में बँटा हुआ है। नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर इसे दो भागों में बाँटती है। ये हैं-

1. **मध्यवर्ती उच्च भूमि** - यह नर्मदा से उत्तर की ओर विशाल मैदान तक फैला हुआ है। इसके पश्चिम में अरावली पर्वत है, जिसकी सबसे ऊँची चोटी गुरु शिखर (1722 मीटर) है। बीच की उच्च भूमि को कई अलग-अलग भागों में बाँटा गया है। अरावली के पूर्व के भाग को मालवा के पठार के नाम से जाना जाता है। इसके पूर्व में बुंदेलखंड का पठार और बघेलखंड का पठार है। बघेलखंड के पठार के पूर्व में छोटा नागपुर का पठार स्थित है। इस उच्च भूमि के दक्षिणी भाग में विंध्याचल और उत्तर-पूर्व में महादेव, कैमूर और मैकल की पहाड़ियाँ हैं। नर्मदा, सोन, चंबल यहाँ कि प्रमुख नदियाँ हैं। यहाँ नर्मदा को छोड़कर बाकी सभी नदियाँ पूर्व की ओर बहकर गंगा नदी तंत्र में मिलती है, जबकि नर्मदा पश्चिम में बह कर अरब सागर में मिल जाती है।

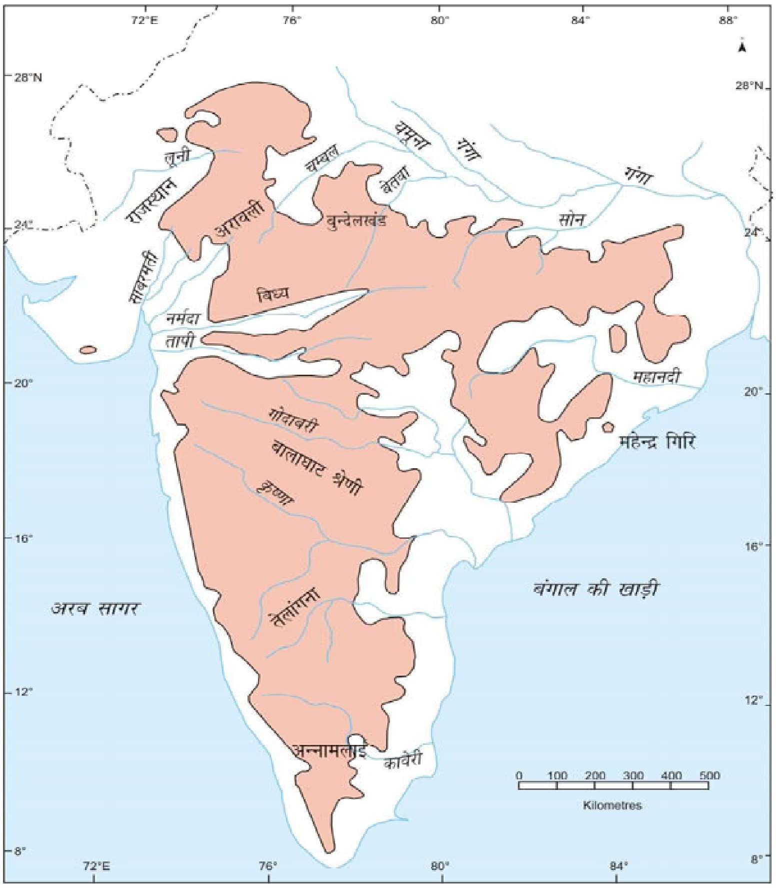

चित्र 9.5 : विशाल पठार

2. **प्रायद्वीपीय पठार (दक्कन का पठार)** - यह विशाल पठार का सबसे बड़ा भाग है। यहाँ पर जो मानचित्र दिया गया है, उसे ध्यान से देखिए, उसमें एक तिकोने आकार की आकृति है। यही प्रायद्वीपीय पठार है। इसका उत्तरी हिस्सा नर्मदा नदी के समानान्तर है, जिसकी सीमा में सतपुड़ा श्रेणी, महादेव पहाड़ियाँ, मैकल श्रेणी और राजमहल की पहाड़ियाँ हैं। इसका दूसरा हिस्सा राजमहल की पहाड़ियों से लेकर कन्याकुमारी तक है, जबकि तीसरा हिस्सा कन्याकुमारी से लेकर नर्मदा नदी तक है, जिसे पश्चिमी घाट (सहयाद्री पर्वत) कहते हैं। प्रायद्वीपीय पठार की औसत ऊँचाई 500 से 1000 मीटर है। इसका सबसे ऊँचा शिखर अनाईमुदी (2695 मीटर) है, जो केरल में स्थित है। गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, पेन्नार, महानदी आदि यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। यह पठार खनिज संसाधनों का भंडार है। वहीं यहाँ मसालों की खेती भी प्रमुखता से की जाती है।

घ. तटीय मैदान और द्वीप समूह

प्रायद्वीपीय पठार दो ओर से तटीय मैदानों से घिरा हुआ है। इन्हें दो भागों में बाँटा गया है- पूर्वी तटीय मैदान और पश्चिमी तटीय मैदान। पूर्वी तटीय मैदान पूर्व में गंगा नदी के मुहाने से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक बंगाल की खाड़ी के साथ फैला हुआ है। इसकी औसत चौड़ाई 210 किलोमीटर है। इसे दो भागों में बाँटा गया है- उत्तरी भाग को उत्तरी सरकार और दक्षिणी भाग को कोरोमंडल तट कहते हैं। यहाँ की प्रमुख नदियाँ महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी हैं। ये सारी नदियाँ डेल्टा बनाती हैं। यहीं महानदी के डेल्टा में भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील चिल्का है। पश्चिमी तटीय मैदान कन्याकुमारी से कच्छ के रन तक फैला हुआ है। इसकी औसत चौड़ाई 10-20 किलोमीटर है, परन्तु यह उत्तर में ज्यादा चौड़ा है। इसे तीन भागों में बाँटा गया है- (1) कोंकण (दमण से गोवा तक), (2) कर्नाटक तट (गोवा से मंगलौर तक), (3) मालाबार तट (मंगलौर से कन्याकुमारी तक)।

भारत की विशाल भूमि के साथ ही द्वीपों के दो खूबसूरत समूह भी हैं- एक है बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के रूप में 204 द्वीपों का समूह। दूसरा है, लक्षदीप, जो कि अरब सागर में 43 द्वीपों का अपेक्षाकृत छोटा समूह है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में ही भारत का सबसे दक्षिणी भाग इंदिरा पॉइंट स्थित है। ये दोनों समूह पर्यटन के बड़े केन्द्र हैं।

पाठगत प्रश्न 9.2

1. **निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरिए :**

(2500 कि.मी, 7 लाख वर्ग कि.मी., मैदान, मालवा का पठार, कोरोमडंल तट, उत्तरी सरकार)

(क) नदियों तथा वायु द्वारा लाई गई मिट्टी के जमने से .... का निर्माण होता है।

(ख) हिमालय की लंबाई लगभग .... है।

(ग) उत्तरी विशाल मैदान लगभग .... में फैला है।

(घ) पूर्वी तटीय मैदान का उत्तरी भाग .... तथा दक्षिणी भाग .... कहलाता है।

2. सही विकल्प चुनिए :

(i) प्रायद्वीपीय पठार की औसत ऊँचाई क्या है-

(क) 200 से 400 मी. (ख) 2000 से 3000 मी.

(ग) 500 से 1000 मी. (घ) 0000 से 6000 मी.

(ii) गुरु शिखर की ऊँचाई है-

(क) 1722 मी. (ख) 1011 मी.

(ग) 1800 मी. (घ) 1600 मी.

(iii) पश्चिमी मैदान का निर्माण हुआ है-

(क) गंगा व सहायक नदियों से (ख) सिंधु व सहायक नदियों से

(ग) गोदावरी व सहायक नदियों से (घ) इनमें से कोई नहीं

9.3 भारत की जलवायु और मानसून

क्या आपने कभी सोचा है कि हम वर्ष के अलग-अलग महीनों में अलग-अलग मौसम क्यों अनुभव करते हैं? कभी हमें ठंड लगती है, तो कभी गर्मी और कभी लगातार बारिश होती है। यही नहीं, जब हम किसी दूर-दराज के क्षेत्र में जाते हैं तो वहाँ हमें अलग तरह के मौसम का अनुभव होता है। आखिर ऐसा क्यों होता है? भारत की जलवायु तो मानसूनी है परन्तु यहाँ अलग-अलग तरह के मौसम पाए जाते हैं।

क्या आप जानते हैं?

एक बहुत बड़े क्षेत्र में लंबे समय के लिए (30 वर्ष से अधिक) मौसम की दशाओं और विविधताओं के कुल योग को जलवायु कहते हैं। किसी एक समय पर वायुमंडल की दशा को मौसम कहते हैं। इसी तरह से मौसमी दशाओं का लंबे समय तक रहना जलवायु बनाने के लिए उत्तरदायी है।

भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग तरह के मौसम पाए जाते हैं। समुद्र से ऊँचाई, सागर तट से दूरी, पर्वतों की स्थिति, भूमध्य रेखा से दूरी आदि अनेक ऐसे कारण हैं, जो यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के मौसम

बनाते हैं। आप पाएँगे कि भारत का उत्तरी हिस्सा बर्फ से ढका रहता है, और अत्यधिक ठंडा है। वहीं दक्षिण में हमेशा गर्मी का मौसम रहता है। पूर्व में जहाँ घनघोर बारिश होती है, वहीं पश्चिम में फैले विशाल रेगिस्तान में वर्षा बहुत कम होती है। इन अलग-अलग मौसमी दशाओं के होते हुए भी, भारत की जलवायु को मानसून जलवायु कहा जाता है।

आपके मन में सवाल उठ रहा होगा कि यह मानसून आखिर है क्या? मानूसन शब्द अरबी भाषा के मौसिम से बना है, जिसका अर्थ मौसम या ऋतु। वर्ष में हवाओं की दिशा में ऋतुवत् परिवर्तन ही मौसम कहलाता है।

क्या आप जानते हैं?

हवा में वजन होता है, जो कि हम पर दबाव डालता है। तापमान और वायुदाब में उल्टा संबंध होता है। जहाँ तापमान अधिक होता है, वहाँ वायुदाब कम रहता है, जबकि कम तापमान वाले स्थान में वायुदाब अधिक होता है। वायुदाब में अंतर ही हवा चलने के लिए जिम्मेदार होता है। हवा हमेशा अधिक वायुदाब वाले स्थान से कम वायुदाब वाले स्थान की ओर चलती है।

गमियों के दौरान भारत का अधिकांश हिस्सा गर्मी से तप रहा होता है, जबकि भारत के दक्षिण में फैला विशाल हिन्द महासागर थोड़ा कम गर्म होता है। इस प्रकार भारत के स्थल भाग में कम वायुदाब का क्षेत्र होता है, जबकि हिंद महासागर के ऊपर अधिक वायुदाब का क्षेत्र। इस प्रकार सागरीय भाग से स्थल की ओर हवाएँ चलने लगती हैं। सागरीय भाग से चलने के कारण इनमें बहुत नमी होती है। इस कारण ये हवाएँ लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में जून से सितम्बर के मध्य वर्षा करती हैं। इसके अलावा शीत ऋतु में भी पीछे हटते हुए मानसून से बारिश होती है। अब आप सोच रहे होंगे कि ये पीछे हटता हुआ मानसून क्या है? सितम्बर माह के अंत से सम्पूर्ण उत्तर भारत में शीत ऋतु की शुरूआत हो जाती है। इससे अगले कुछ महीने यहाँ उच्च वायुदाब का क्षेत्र बनता है। इसके अलावा सागरीय भाग अभी भी गरम रहता है। अतः यहाँ उच्च वायु दाब क्षेत्र (उत्तर भारत) से निम्न वायुदाब क्षेत्र (बंगाल की खाड़ी) की ओर हवाएँ चलनी शुरू हो जाती हैं। इसी कारण से बंगाल की खाड़ी में चक्रवात बनते हैं, जिनसे ओडिशा, आंध्र प्रदेश व तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में वर्षा होती है।

भारत में ऋतुएँ

कृषि प्रधान देश होने की वजह से हम पूरी तरह ऋतुओं से जुड़े हुए हैं। ये हमारे सामाजिक-आर्थिक जीवन को प्रभावित करते हैं। हमारे खेती से जुड़े क्रियाकलाप इन मौसमों पर ही आधारित होते हैं। कभी आपने सोचा है कि हम खरीफ की फसल मानसून शुरू होते ही क्यों बोते हैं? ग्रीष्म ऋतु की शुरूआत में हम रबी की फसल की कटाई के बारे में क्यों सोचना शुरू कर देते हैं? यहाँ तक कि हमारे त्यौहार भी इन ऋतुओं के साथ जुड़े हुए हैं। इसलिए इन ऋतुओं के बारे में जानना आवश्यक हो जाता है। भारत में प्रमुख रूप से चार प्रकार की ऋतुएँ हैं-

(क) शीत ऋतु (दिसम्बर - फरवरी)

(ख) ग्रीष्म ऋतु (मार्च - मई)

(ग) आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिम मानूसन की ऋतु (जून-सितम्बर)

(घ) पीछे हटते हुए मानसून की ऋतु (अक्टूबर-नवम्बर)

क. शीत ऋतु (दिसम्बर - फरवरी) : भारत में शीत ऋतु दिसम्बर से प्रारम्भ होकर फरवरी तक रहती है। यहाँ तापमान दक्षिण में अपेक्षाकृत ज्यादा होता है, जो उत्तर की ओर कम होता जाता है। शीत ऋतु में उत्तर भारत का औसत तापमान 12 से 15 डिग्री सेंटीग्रेड होता है, जबकि दक्षिण में यह 25 सेंटीग्रेड रहता है। दिसम्बर तथा जनवरी सबसे ठंडे महीने होते हैं। इस समय उत्तर व उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश क्षेत्र में पाला पड़ता है। हिमालय के ढलान वाले भागों में हिमपात भी होता है। पश्चिम की ओर से आने वाली हवाओं से उत्तर भारत के कई भागों में बारिश भी होती है। हालांकि शेष भारत में वर्षा नहीं होती, क्योंकि हवाएँ स्थल भाग से जलीय भाग की ओर चल रही होती हैं।

ख. ग्रीष्म ऋतु (मार्च - मई) : यह समय काफी तपन भरा होता है। तापमान धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। उत्तरी मैदान, पश्चिमी भारत और प्रायद्वीपीय भाग विशेष रूप से गर्म होते हैं। उत्तर-पश्चिमी भारत धूल भरी आँधियों से प्रभावित होता है। वहीं उत्तरी मैदानों में झलुसाने वाली गर्म और शुष्क हवाएँ चलती हैं, जिन्हें 'लू' कहते हैं। इस समय भारत के लगभग सम्पूर्ण उत्तरी मैदान और प्रायद्वीपीय पठार में निम्न वायुदाब का क्षेत्र होता है। जबकि हिंदमहासागर में उच्च वायुदाब का क्षेत्र बन रहा होता है। यही वायुदाब का अंतर मानसून को प्रारम्भ करने का कारण बनता है। इस समय कभी-कभी तेज धूल भरी आँधियाँ चलती हैं और तेज बारिश भी हो जाती है। कभी-कभी तेज बारिश के साथ ओला वृष्टि भी होती है। पश्चिम बंगाल में वैशाख के महीने में आने वाले ऐसे तूफानों को 'काल वैशाखी' कहते हैं। गर्मी के अत तक केरल और कर्नाटक में मानूसन के पूर्व हल्की बारिश हो जाती है। यह आम की फसल के पकने में सहायक होती है, इसलिए इसे 'आम्रवृष्टि' भी कहते हैं।

ग. आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिम मानसून की ऋतु (जून - सितम्बर) : गर्मी की तपन के बाद इस खशनुमा ऋतु का आरंभ होता है, जिसका सभी को खासकर किसानों को बेसब्री से इंतजार रहता है। यह ऋतु जून से सितम्बर के बीच होती है। जैसा कि आपने पहले पढ़ा है इस समय उत्तर भारत में निम्न वायुदाब का केन्द्र होता है, जबकि हिंदमहासागर में उच्च वायुदाब होता है। अतः इस समय जल से थल की ओर नम हवाएँ चलनी प्रारम्भ हो जाती हैं। जून के प्रथम सप्ताह में ये हवाएँ केरल के तटीय भागों में प्रवेश कर बिलजी की तेज चमक एवं गर्जन के साथ बारिश आरंभ कर देती है। धीरे-धीरे मानसून उत्तर भारत की ओर बढ़ता जाता है। दक्षिण-पश्चिम मानसून की दो शाखाएँ हैं- (1) अरब सागर से आने वाली अरब सागर शाखा, और (2) बंगाल की खाड़ी से आने वाली बंगाल की खाड़ी शाखा।

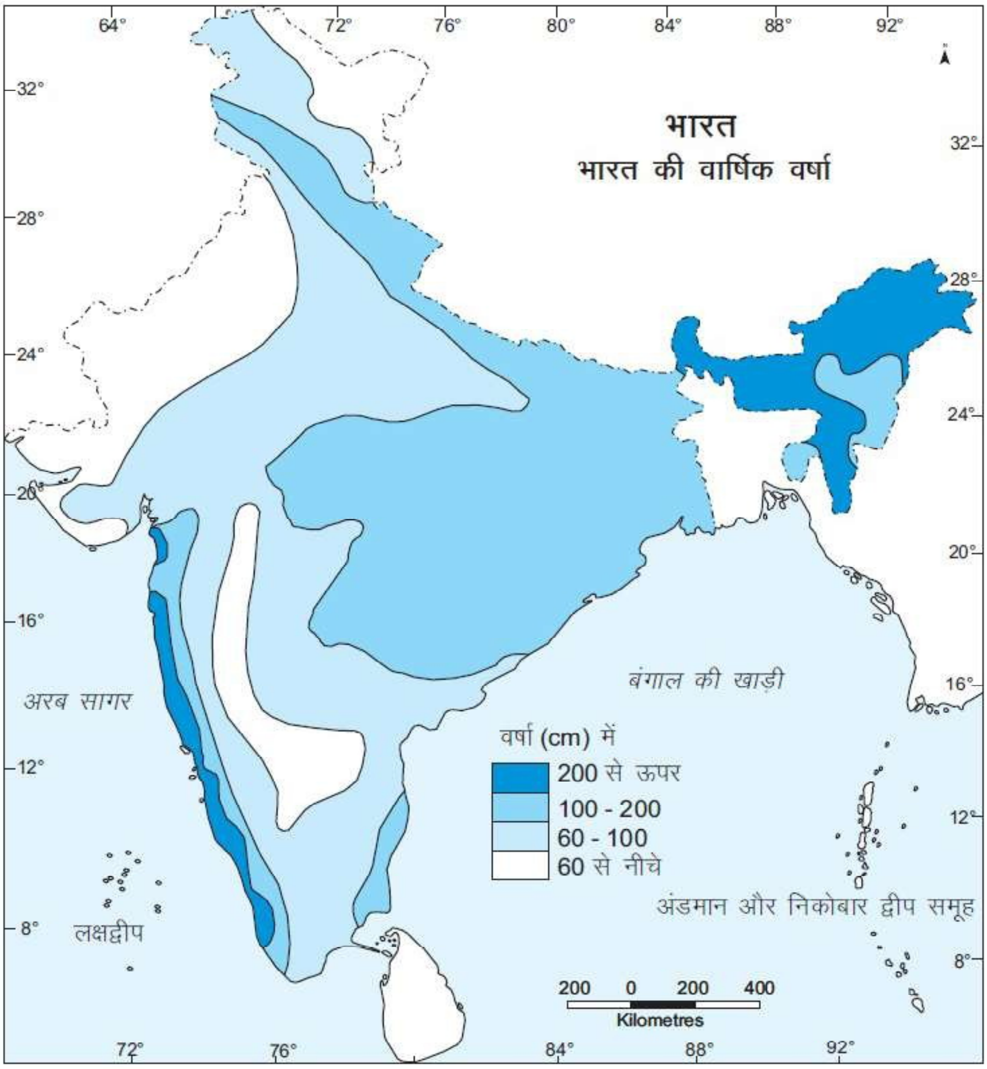

चित्र 9.6 : भारत में वर्षा

इस ऋतु में वर्षा की विशेष बात यह है कि वर्षा उत्तर की ओर धीरे-धीरे कम होती जाती है। जैसे कोलकाता में 120 से.मी. वर्षा होती है, पर दिल्ली में केवल 56 से.मी.। मानसूनी वर्षा लगातार नहीं होती, बल्कि इसमें बीच-बीच में शुष्क दौर भी आते हैं, जब कुछ दिनों तक बारिश नहीं होती। दक्षिण-पश्चिम मानूसन अनिश्चित होता है। अत: इस समय बाढ़ एक बड़ी समस्या बन जाती है। अतिवृष्टि एवं सही जल प्रबंधन न होने के कारण भारत के अनेक भाग इस समय बाढ़ से प्रभावित हो जाते हैं। इसके विपरीत कई भाग सूखे की चपेट में भी आ जाते हैं।

घ. **पीछे हटते हुए मानसून की ऋतु (अक्टूबर - नवम्बर) :** यह सबसे छोटी ऋतु है, जो केवल 2 महीने (अक्टूबर और नवम्बर में) रहती है। सितम्बर-अक्टूबर में तापमान कम होने के साथ उत्तर भारत में निम्न वायुदाब का क्षेत्र कमजोर पड़ने लता है। इस समय मौसम गर्म, लेकिन उमस वाला होता है, जिसे आमतौर पर 'क्वार की उमस' कहते हैं। अक्टूबर के अंत तक रात अपेक्षाकृत ठंडी

और सुहानी हो जाती है। इन महीनों में निम्नवायु क्षेत्र बंगाल की खाड़ी में बनने से चक्रवातीय तूफान आते हैं, जिनसे ओडिशा, आंध्र प्रदेश दाब और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में भारी बारिश होती है। इससे इन क्षेत्रों में हर साल बड़े पैमाने पर नुकसान होता है।

पाठगत प्रश्न 9.3

1. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–**

   (काल वैशाखी, कम वायुदाब, क्वार की उमस)

   (क) गर्मियों में भारत के स्थल भाग में .... का स्थान होता है।

   (ख) पश्चिम बंगाल में वैशाख महीने में आने वाले तूफानों को .... कहते हैं।

   (ग) .... पीछे हटते मानसून में होती है।

2. आम्रवृष्टि किसे कहते हैं?

   ....

   ....

3. दक्षिण-पश्चिम मानसून की शाखाओं के नाम लिखिए।

   ....

   ....

9.4 मिट्टी और उसका संरक्षण

जन्म लेने से लेकर जीवन के हर पड़ाव में हम मिट्टी से जुड़े हुए हैं। भारत में मिट्टी के रूपों के बारे में जानने से पहले आइए जानें कि आखिर मिट्टी है क्या? असंगठित पदार्थों से बनी पृथ्वी की सबसे ऊपरी परत मिट्टी कहलाती है। इसका निर्माण कई वर्षों में खनिजों, पौधों और जीव-जन्तुओं के अवशेषों से होता है। उपजाऊ मिट्टी मनुष्य के बहुत सारे क्रिया-कलापों का आधार है। परन्तु सभी स्थानों की मिट्टी एक जैसी नहीं होती है। इनमें क्षेत्र के आधार पर भिन्नताएँ पाई जाती हैं। भारत में भी मिट्टी के अनेक रूप हैं। आइए, इनके बारे में जानें–

क्या आप जानते हैं?

ह्यूमस मिट्टी की सबसे ऊपरी गहरे रंग की परत है, जिसका निर्माण मृत जैव-अवशेषों से होता है। यह बहुत उपजाऊ होती है।